स्मारिका

भिखारी ठाकुर लोक साहित्य एवं संस्कृति महोत्सव

18-20 दिसम्बर, छपरा, सारण, बिहार

पटना - 3.5.06

दस्तावेज

भोजपुरी के अनगढ़ हीरा: भिखारी ठाकुर

राहुल संकृत्यायन

हमनी के बोली में केतना जोर हवे, केतना तेज बा, ई अपने—सब भिखारी ठाकुर के नाटक में देखीलें। लोग के काहें नीमन लागेला भिखारी के नाटक । काहे दस—दस, पनरह हजार के भीड़ होला ई नाटक के देखे खातिर । मालूम होता कि एही नाटक में पउलिक के रस के रस आवेला। जवना चीज में रस आवे उहे कविताई। कैहु के जो लमहर नाक होय आ उ खाली दोसे ही सूँघत फिरे त ओकरा खातिर का कहल जाय । हम ई ना कहतानी जे भिखारी ठाकुर के नाटकन में दोष नइखे । दोष बा त ओकर कारन भिखारी ठाकुर नइखन, ओकर कारन हवे पढुआ लोग । उहो लोग जो अपन बोली से नेह दिखावत, भिखारी ठाकुर के नाटक देखत आ ओमें कवनो बात सुझावत त ई कुलि दोष मिट जात। भिखारी ठाकुर हमनी के एगो अनगढ़ हीरा हवे । उनकरा में कुलि गुन बा, खाली एने ओने तनी चुनी छाँटे के काम हवे।

(दिसम्बर 1947 में गोपालगंज में आयोजित क्षेत्रीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्षीय भाषण से)

स्मारिका

डॉ. वीरेन्द्र नारायण यादव
प्रधान संपादक

डॉ. विद्याभूषण श्रीवास्तव
प्रबंध संपादक

संपादक मंडल
डॉ. प्रभुनाथ सिंह
डॉ. लालबाबू यादव
जीतेन्द्र वर्मा
रजनीश कुमार "गौरव"

स्मारिका
भिखारी ठाकुर लोक साहित्य एवं संस्कृति महोत्सव, 18-20 दिसम्बर-2001
छपरा (सारण)

© लेखक

दिसम्बर 2001

सहयोग राशि - 51.00 रुपया मात्र

आवरण - भिखारी ठाकुर ग्रन्थावली प्रथम खंड के आवरण से ।

स्मारिका में प्रकाशित किसी रचना में व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं ।
इसके लिए संपादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है ।

संपादन, प्रकाशन पूर्णतः अवैतनिक

प्रकाशन - आयोजन समिति, भिखारी ठाकुर लोकसाहित्य एवं संस्कृति महोत्सव
छपरा (सारण)

अक्षर संयोजन :
जे. एम. कम्प्यूटर्सपश्चिमी लोहानीपुर, कदमकुआँ पटना-3

मुद्रक :
न्यु प्रिन्टी प्रेस, बोरिंग रोड पटना-1

अनुक्रम

शीर्षक	लेखक	पृष्ठ
1. संदेश		4-8
2. संपादकीय	डॉ॰ वीरेन्द्र नारायण यादव	9-10
3. भिखारी ठाकुर लोकसाहित्य एवं संस्कृति महोत्सव के आयोजन का औचित्य एवं उद्देश्य	डॉ॰ विद्याभूषण श्रीवास्तव	11-13
4. लोक संस्कृति के पुरोधा पुरूष: भिखारी	डॉ॰ लालबाबू यादव	14-17
5. लोककलाकार भिखारी ठाकुर की सफलता	प्रो॰ ब्रजकिशोर	18-23
6. भारतीय नवजागरण और भिखारी ठाकुर	जीतेन्द्र वर्मा	24-28
7. भिखारी ठाकुर पर उपन्यास 'सूत्रधार' लिखते समय जैसा मुझे लगा	संजीव	29-30
8. मरणोपरांत एक भिखारी की भूमिका में भिखारी ठाकुर	रजनीश कुमार 'गौरव'	30
9. एक कालजयी कलाकार: भिखारी ठाकुर	अविनाश नागदंश	31-34
10. हाल भिखारी ठाकुर के गाँव का (फोटो-फीचर)		35
भोजपुरी खंड		
11. भिखारी ठाकुर के साहित्य में गीत-योजना	डॉ. उर्षा वर्मा	36-39
परिशिष्ट		
12. भिखारी ठाकुर लोक साहित्य एवं संस्कृति महोत्सव- 2001		40-42

अनुक्रम

शीर्षक	लेखक	पृष्ठ
1. संदेश		4-8
2. संपादकीय	डॉ॰ वीरेन्द्र नारायण यादव	9-10
3. भिखारी ठाकुर लोकसाहित्य एवं संस्कृति महोत्सव के आयोजन का औचित्य एवं उद्देश्य	डॉ॰ विद्याभूषण श्रीवास्तव	11-13
4. लोक संस्कृति के पुरोधा पुरूष: भिखारी	डॉ॰ लालबाबू यादव	14-17
5. लोककलाकार भिखारी ठाकुर की सफलता	प्रो॰ ब्रजकिशोर	18-23
6. भारतीय नवजागरण और भिखारी ठाकुर	जीतेन्द्र वर्मा	24-28
7. भिखारी ठाकुर पर उपन्यास 'सूत्रधार' लिखते समय जैसा मुझे लगा	संजीव	29-30
8. मरणोपरांत एक भिखारी की भूमिका में भिखारी ठाकुर	रजनीश कुमार 'गौरव'	30
9. एक कालजयी कलाकार: भिखारी ठाकुर	अविनाश नागदंश	31-34
10. हाल भिखारी ठाकुर के गाँव का (फोटो-फीचर)		35
भोजपुरी खंड		
11. भिखारी ठाकुर के साहित्य में गीत-योजना	डॉ. उर्षा वर्मा	36-39
परिशिष्ट		
12. भिखारी ठाकुर लोक साहित्य एवं संस्कृति महोत्सव- 2001		40-42

उदित राय

राज्यमंत्री
नगर विकास विभाग
बिहार सरकार

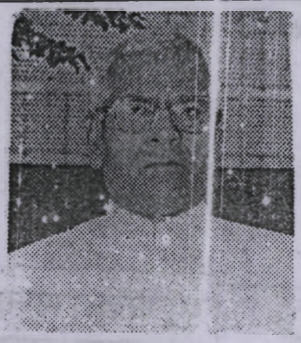

दिनांक - 06.12.2001

संदेश

भिखारी ठाकुर लोक साहित्य एवं संस्कृति महोत्सव, 2001 भिखरी ठाकुर के मूल्यांकन तथा, उनसे प्रेरण ग्रहण करने का एक विनम्र प्रयास है । उनके नाटकों से भोजपुरी भाषी क्षेत्र में एक नया जागरण आया था जिसे अभी तक इतिहास में स्थान नहीं मिला है । समाज सुधार की भावना से सराबोर उनका दृष्टिकोण अनुकरणीय है ।

मुझे पूरा विश्वास है कि इस अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका संग्रहणीय होगी । शुभकामानाओं के साथ

आपका

(उदित राय)

PRABHUNATH SINGH
Member of Parliament
Lok Sabha

2 Talkatora Road
New Delhi - 110001
Phone – 3358429
0612-222358, 211711 (Patna)
06152 & 26838 (Chapra)
06159-74-255250 (Mashrak)

शुभकामना

भिखारी ठाकुर लोक साहित्य एवं संस्कृति महोत्सव के आयोजन पर मुझे बड़ी प्रसन्नता है । समाज सुधार, विशेष कर नारी मुक्ति के दिशा में उनका प्रयास स्मरणीय है ! आज उनका साहित्य हमारा मार्गशर्दश कर रहा है महोत्सव तथा स्मारिका के लिए मेरी शुभकामना स्वीकार करें ।

प्रभुनाथ सिंह

मनोरंजन सिंह उर्फ धूमल सिंह
विधायक
बनियापुर वि. स. क्षेत्र

शुभकामना

बनियारपुर वि. स. क्षेत्र की जनता की तरफ से भिखारी ठाकुर लोक साहित्य एवं संस्कृति महोत्सव-2001 की सफलता की कामना करता हूँ तथा अपने वि. स. क्षेत्र की जनता को नये साल की शुभकामनाये प्रेषित कर रहा हूँ ।

मनोरंजन सिंह

PANKAJ KUMAR
I.A.S
District Magistrate & Collector
Saran, Chapra.

सत्यमेव जयते

सन्देश

यह जान कर प्रसन्नता हुई कि भिखारी ठाकुर लोकसाहित्य एवं संस्कृति महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है । लोककवि भिखारी ठाकुर भोजपुरी नाटको / गीतों के जनक थे । उन्हें भोजपुरी साहित्य के शेक्सपीयर की संज्ञा भी दी जाती है । उनके द्वारा लिखित 'बेटी बेचवा' और 'बिदेसिया' नाटको ने समाज में क्रांति ला दी। इन नाटकों में उन्होंने स्वयं अभिनय भी किया था । तत्कालीन सामाजिक कुरीतियो एवं रूढ़ीवादी समाज पर उन्होनें अपने नाटको के माध्यम से गहरा कटाक्ष किया ।

उनकी जयन्ती के अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका अपने उद्देश्य में सफल हो, यह मेरी हार्दिक शुभकामना है ।

पंकज कुमार

जनार्दन सिंह सीग्रीवाल
सदस्य
बिहार विधान सभा

निवास :
92-93 विधायक क्लब
वीरचन्द पटेल पथ, पटना-1
223216 (पटना)
914-23500 (छपरा)
06155-88321 (जलालपुर)

संदेश

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि भिखारी ठाकुर की 114वीं जयंती के अवसर पर लोक-साहित्य एवं संस्कृति महोत्सव का सम्पन्न होने जा रहा है । भिखारी ठाकुर एक प्रगतिशील लोक नाट्यकर्मी तथा साहित्यकार थे । आज भी उनकी प्रासंगिता है । स्मारिका तथा महोत्सव के सफलता के लिए मेरी शुभकामनाएँ हैं ।

(जनार्दन सिंह सीग्रीवाल)

विनय कुमार सिंह
सदस्य
बिहार विधान सभा

44, सोनपुर विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र
☎ - 81302 (आमी)

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि भिखारी ठाकुर के जयंती के अवसर पर लोक साहित्य एवं संस्कृति महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है । भिखारी ठाकुर भारत की समृद्ध नाट्य परंपरा के अन्यतम उदाहरण हैं । महोत्सव तथा स्मारिका के लिए मेरी शुभकामनाएँ स्वीकार करें।

(विनय कुमार सिंह)

सारण जिला परिषद्, छपरा

ब्रजकिशोर सिंह
उपाध्यक्ष

ग्राम - लक्ष्मीपुर, ककढ़ियां
पो. - दिघवारा, जिला सारण
दूरभाष- 956158/81287 (आ.)
956152/234-51

सेवा में,

माननीय श्री उदित राय
अध्यक्ष, स्वागत समिति

महोदय,

भिखारी ठाकुर लोक साहित्य एवं सांस्कृतिक महोत्सव 2001 के लिए मेरी शुभकामना स्वीकार कर मुझे अनुगृहित करने की कृपा करें ।

आपका

(ब्रजकिशोर सिंह)

सम्पादकीय

आज विश्व में उपभोक्तावादी संस्कृति एवं विश्व बाजार-निर्माण का दौर चल रहा है । इसके प्रभाव का एहसास होने लगा है । एक वर्चस्ववादी संस्कृति पनप रही है जो लोक-संस्कृतियों एवं साहित्य के सौंदर्य और खूबसूरती को समाप्त कर देगी । अब हमारे खाने-पीने गाने-बजाने सोचने समझने और लिखने-पढ़ने में भी उसका दखल होगा अब बहुराष्ट्रीय दैत्यों के इशारे पर सब कुछ निर्धारित होगा । वे जो चाहेंगे वही होगा । हम अपने स्वाभाविक सुख दुःख के क्षणों की अभिव्यक्ति लोकाश्रित विरहा, चाचर फाग बिरौहली, आल्हा बारहमासा काव्य रूपों में न कर पॉप संगीत या अन्य विदेशी शैली में ही करने को बाध्य होगे । लोक भाषाओं एवं बोलियों को तो छोड़िये राष्ट्रभाषा का दर्जा प्राप्त हिन्दी भी अंग्रेजी के सामने लड़खड़ा रही है । बहुराष्ट्रीय कंपनी के मालिक की भाषा चलेगी । वह हमें बाध्य कर देगा । ऐसी परिस्थिति में हम स्वयं अपने को भूल जायेगें । आदमी के लिए यह बड़ी खतरनाक स्थिति होती है । अपनी अस्मिता और होने का भाव ही आत्मा की पहचान है । उसी पर हमला है । ऐसे समय में लोकगायक एवं नत्तक भिखारी ठाकुर की जन्मदिवस को उत्सव के रूप में मनाने का बहुआयामी अर्थ एवं महत्त्व है । भिखारी ठाकुर भोजपुरी संस्कृति, साहित्य, विचार, चिंतन भाषा के समर्थ सम्वाहक तथा प्रचारक थे । उनकी रचनाओं में भोजपुरी भाषा तथा संस्कृति सुरक्षित है । 'बिदेशिया आदि काव्य रूपों के तो वे प्रवर्त्तक ही थे । विदेशी शासकों के समय में अपनी नाटक-मण्डली स्थापित कर जनता के सुख दुःख को अभिव्यक्ति देना हमारी समझ से भिखारी ठाकुर की अद्‌भूत संगठन शक्ति तथा उर्जा का परिचायक है वे हमे राष्ट्रीय अस्मिता के रक्षक एवं पहरेदार के रूप दिखलाई पड़ते है । भोजपुरी समाज मे फैली विद्रुपताओं का सफल चित्रन बेटी बेचवा नाटक में हुआ है । यह बेमेल विवाह का सशक्त उदाहरण है । इसके साथ-साथ इस नाटक में गहना-प्रेम जैसी एव विसंगतियों का चित्रण है । ''झॉटल'' दुल्हा के सौंदर्य एवं आभूषण के वर्णन में तो ठाकुर की हास्य व्यग्य शैली तीक्ष्ण तथा धारदार दिखयी पड़ती है । कही छोटी-छोटी कुप्रवृतियों पर भी कुठाराघात किया गया है कहीं वे कबीर को भी पीछे छोड़ देते है । दुल्हे के साज-शृंगार का ठीक वही हाल है जैसे ''छुछुन्दर के सिर पर चमेली का तेल ।'' इस प्रकार के उदाहरण भरे पड़े है जो भिखारी ठाकुर के विशाल अनुभव एवं शब्द चयन को प्रकट करते हैं।

प्रसिद्ध पाश्चात्य शैली-किविचव ल्युक। ने कहा था कि कवि को पाठक के प्रति ईमानदार होना चाहिये । भिखारी ठाकुर पाठक एवं समाज के प्रति इतने प्रतिबद्ध है तभी तो इन्हें अपार जन समर्थन मिलता था । प्रसिद्ध भाषाशास्त्री उदय नारायण तिवारी ने स्वीकार किया है कि इनकी कविता में भोजपुरी जनता अपना सुःख-दुःख एवं भलाई बुराई को प्रत्यक्ष रूप में देखती है । (भोजपुरी भाषा और साहित्य) अतः आज हम इस स्मारिका आयोजन के माध्यम से भारतीय संस्कृति की विविधता में निहित सौंदर्य की रक्षा हेतु गुहार लगा रहे हैं तथा वर्च स्ववादी संस्कृति से सावधान रहने का निवेदन भी कर रहें हैं ।

आज देश की सारी पत्र-पत्रिकाएँ नारी-विमर्श एवं दलित-विमर्श पर केंद्रित हैं । विश्व प्रसिद्ध नारीवादी लेखिका सिमोन द बोउवार ने भी 1949 में "स्त्री उपेक्षिता" के माध्यम से नारी के वश को गंभीरता से देखा पर भिखारी ठाकुर तो 'विदेशिया', 'गबर घिचोर', 'बेटी बेचवा', 'भाई विरोध', नाटको के साथ-साथ अपनी अन्य रचनाओं में भी बड़ी गभीरता से सदियों से सतायी गयी नारी के दुःख को अभिव्यक्ति दे चुके थे कही भी दुःख एवं विरह में पड़ी हुई भोजपुरी समाज की नारी उनके आँख से ओझल नहीं हो पाती । उसके दुःख एवं वियोग से भिखारी के जीवन में सिर्फ वियोग ही वियोग है, वास्तविक वियोग समाज द्वारा तिरस्कृत वियोग और सामाजिक कुरीतियों से उत्पन्न हास्पास्यपद वियोग। कही माता पुत्र के लिए विखल रही है, कही भाभी, देवर के लिए तड़प रही है, कहीं बेटी, बूढ़े पति को देखकर कॉप रही है- ऐसे अनेक कारूणिक दृश्यों से भिखारी को रचनायें भी भरी पड़ी है । इस प्रकार भिखारी अपने चिंतन एवं सोच में अत्यन्त प्रगतिशील वैज्ञानिक एवं आधुनिक हैं, समाज के हर कमजोर नस पर अंगुली रखकर उन्होंने हमें सावधान किया है । "सदा भिखारी रहसु भिखारी" की घोषणा करके भिखारी ठाकुर कबीरादि संत कवियों की परंपरा में दिखाई पड़ते हैं तथा आज के धनपिपासु समाज को सोचने-समझने के बाध्य करते हैं, उन्हें सुखमय जीवन का राज बताते है इन्ही शब्दों के साथ लोककवि भिखारी ठाकुर को शतशत नमन ।

इस आयोजन एवं स्मारिका के प्रेरणा स्रोत प्रसिद्ध अर्थशास्त्री एवं पूर्व वित्त राज्य मंत्री डॉ० प्रभुनाथ सिंह और हमारे मित्र डॉ० लालाबाबू यादव तथा इनके तमाम पत्रकार साथियों के परिश्रम से ही यह स्मारिका अल्पावधि में निकल पाई शीघ्रता ने स्मारिका को वैसा नहीं होने दिया जैसा आयोजक चाहते थे पर इस नागार्जुन के शब्दों में 'राख में छिपी हुयी चिनगारी' समझेंगे जिससे पुनः सुबह में चेतना की ज्वाला जल जाय' तो इसी में स्मारिका की सार्थकता है ।

वीरेन्द्र नारायण यादव

(वीरेन्द्र नारायण यादव)

भिखारी ठाकुर लोकसाहित्य एवं संस्कृति महोत्सव के आयोजन का औचित्य एवं उद्देश्य

–डॉ॰ विद्याभूषण श्रीवास्तव

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने कहा था कि मैं अपने कमरे के सभी दरवाजे और खिड़कियाँ खुली रखना चाहता हूँ ताकि ताजी हवा का झोंका सदा मेरे कमरे में आता रहे । किंतु; उन्होंने यह भी कहा था कि जब हवा के झोंके इतने तेज हो जाये कि हमारे पाँव ही जमीन से उखड़ने लगे तब खिड़की और दरवाजों को बन्द कर देना ही भला होगा ।

पिछली सदी के आखिरी दशक से देश में नई आर्थिक नीति के लागू होने के बाद से देश जिस उपभोगवादी रास्ते पर चल पड़ा है, उसमें संचार माध्यमों के माध्यम से गाँव-गाँव में पसरती जा रही पाश्चात्य अपसंस्कृति का बहुत बड़ा हाथ है । कहा जाता है कि आर्थिक दासता से कई गुणा घातक होती है सांस्कृतिक दासता । आजादी की आधी सदी की यात्रा पूरी करते -करते आज भारत जिस प्रकार से आर्थिक साम्राज्यवादियों के चंगुल में फॅसकर अपनी सम्प्रभुता को विश्व-बैंक और विश्व व्यापार संगठन के हाथों गिरवी रख चुका हैं, उसमें साहबी संस्कृति के काली चमड़ी के गोरे साहबों का पूरा-पूरा हाथ है ।

कहा जाता है कि [illegible]षा और संस्कृति भी आज के युग में उसी की सशक्त और सर्वव्यापी होती है, जो आर्थिक रूप से [illegible] होता है । सदियों की सार्वजनीन लूट के कारण सबल बनी अंग्रेज जाति और उसकी अंग्रेजी भाषा तथा आंग्ल-संस्कृति के बढ़ रहे वैश्विक वर्चस्व का कारण उनकी यही आर्थिक सम्पन्नता है । अपनी इस समृद्धि की बदौलत ही आज वे अनगिनत उपग्रह चैनलों के माध्यम से दिन-रात असंख्य कार्यक्रमों का प्रसारण विश्व के कोने-कोने में करते हुए सारी दुनियाँ को अपने रंग में रंगते जा रहे । एक ध्रुवीय विश्व को एकल संस्कृतिमय बनाने की यह प्रक्रिया आज इक्कीसवी सदी के सबसे भयावह सांस्कृति खतरे के रूप में समूची दुनियाँ के सामने उपस्थित है जो रोज-ब-रोज आर्थिक बदहाली की ओर अग्रसर हो जा रहे विविध समुदायों की पारम्परिक संस्कृति को उदरस्थ कर उनका नामों-निशान मिटाता चला जा रह है ।

उपग्रहों के माध्यम से पसरती यह पाश्चात्य संस्कृति हमारी जिन स्थानीय संस्कृतियों और भाषाओं-बोलियो को लीलती जा रही है, उनमें गंगा के मैदानी इलाके में बसे अक्खड़ किंतु निश्छल, मेहनतकश पंद्रह करोड़ से भी अधिक लोगो की मातृभाषा भोजपुरी और भोजपुरिया संस्कृति का स्थान

सबसे प्रमुख है । वीडियो फिल्मी और अंग्रेजी आर्केस्ट्राओं के उत्तेजक नृत्यों ने रामलीला नौटंकी और नाच को लील लिया है । हुरके की थाप, सिंघे की गूंज, चैता-फगुआ और बिरहा के बोल गायब हो चुके है । भिखारी ठाकुर, महेनदर मिसिर, रघुवीर नारायण और प्राचार्य मनोरंजन प्रसाद के उत्कृष्ट गीतों की जगह ले ली है गन्दे, अश्लील, फूहड़ और द्विअर्थी गीतों ने । भोजपुरी मे लिखना दोयम दर्जे का लेखन माना जाने लगा है । भोजपुरी भाषियों की अशिक्षा एवं निर्बल क्रयशक्ति भोजपुरी साहित्य के सृजन एवं पत्र-पत्रिकाओं की आयु के मार्ग में सर्वाधिक बड़ी बाधा बनी हुई है और इस तरह सम्पूर्ण भोजपुरी जगत ही अपनी सांस्कृतिक पहचान को आज खो बैठने की कगार पर आ खड़ा हुआ है ।

सांस्कृति-संक्रमण के इस महादौड़ में सिर्फ वही संस्कृतियाँ अपनी जमीन से उखड़ने से बची रह सकती है, जिसकी जड़े जमीन में गहराई तक प्रविष्ट हों, जिनकी जड़ो में आज भी पर्याप्त मात्रा में खाद-पानी डाला जाय । राष्ट्रीय संतकवि-कुल-परम्परा में उन्नीसवी सदी के उत्तरार्द्ध में पुण्यसलिला गंगा, सदानीरा सरयू और उच्छल सोन से चहुंओर से घिरे सारण जिले के कुतुबपुर ग्राम मे उत्पन्न लोकभाषा भोजपुरी के कालजयी लोककवि-कलाकार-नाटककार-सूत्रधार और संचालक भिखारी ठाकुर,जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से तत्कालीन सामाजिक कुरीतियों पर न केवल करारा प्रहार किया था, बल्कि उन्हें दूर करने में भी काफी हद तक कामयाब रहे थे, भोजपुरिया सांस्कृतिक नवजागरण के इक्कीसवीं सदी में एकबार फिर से पुरोधा सिद्ध हो सकते हैं । सूर के सहज स्नेह, तुलसी की भक्ति और कबीर की क्रांतिधर्मिता की अद्भुत त्रिवेणी भिखारी के दोहे आज भी उतने ही अकाट्य हैं, जितने तब थे, जब वे रचे गए थे और कबीर के दोंहो की तरह तबतक सदा प्रासंगिक रहेगें जबतक सारी सामाजिक कुरीतियाँ और विनाशकारी वैषमय सदा-सर्वदा के लिए समाप्त नहीं हो जाते । हमारे भिखारी किसी भी जार्ज हैरियन, माइकल जैक्सन और मैडोना से कम नहीं हैं । लोकभाषा की मृदुल वीणा की मादक झंकार पर लहरों के राजहंस की भांति स्वयं थिरकने वाले भिखारी किसी भी पश्चिमी जुगनू की टिमटिमाहट से ज्यादा प्रदीप्त हैं । जरूरत है भिखारी ठाकुर तथा उनके सदृश अन्य भोजपुरी रत्नों को विशाल भोजपुरिया साहित्यागार से बाहर निकालकर उनको समुचित ढ़ग से एक्सपोज करने की ।

तेजी से विलुप्त हो रह भोजपुरिया लोकसाहित्य एवं विनष्ट होती जा रही लोकसंस्कृति के संवर्धन एवं संरक्षण की दिशा मे भिखारी ठाकुर की 114 वीं जयंती के अवसर पर विश्व भोजपुरी सम्मेलन के तत्वावधान में भिखारी ठाकुर जयंती समारोह समिति द्वारा आयोतित किया जा रहा त्रिदिवसीय 'भिखारी ठाकुर लोकसाहित्य एवं संस्कृति महोत्सव' एक ठोस पहल के रूप इक्कीसवी सदी में अपना स्थान बनायेगा, ऐसी आशा करना निरर्थक नहीं है । भोजपुरी माटी से जुड़े विविध वरिष्ठ साहितयकारों, कलाकारों सामाजिक-सांस्कृतिक कार्मिकों, राजनेताओं और प्रशासनिक अधिकारियों ने इस महोत्सव के

आयोजन मे जिस उल्लेखनीय भूमिका का निर्वाह किया है, हम उसके आभारी हैं और यह आशा की जा सकती है कि आयोजकों का उत्साह यदि इसी प्रकार बरकरार रहा तो भोजपुरिया संसकृति और भोजपुरी भाषा का कोई भी बाल-बाँका नहीं कर सकता, कोई भी भाषाई तथा सांसकृतिक आक्रमण उसको मटियामेट नहीं कर सकता ।

तीन चरणों मे फैले इस महोत्सव में प्रथम दिवस जहाँ प्रख्यात पत्रकार प्रभाष जोशी, वरिष्ठ कवि डॉ० केदारनाथ सिंह, परमानन्द श्रीवास्तव आदि भिखारी ठाकुर चौक, छपरा अवस्थित उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण करेगें, वहीं संध्याकाल में एक भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम भी होगा, जिसमें भिखारी ठाकुर नाट्यमंडली के कलाकार उनके मशहूर नाटकों के महत्त्वपूर्ण अंशो का मंचन तो करेगें ही, भोजपुरी जगत के अनेक नामी-गिरामी संसकृतिकर्मी भी विधि सांस्कृतिक विधाओं का प्रदर्शन करेगें ।

समारोह के द्वितीय चरण में भोजपुरी संस्कृति की विभिन्न विद्याओं को समर्पित एक सत्र, जिसे 'लहालोट' का नाम दिया गया है, महोत्सव का एक महत्त्वपूर्ण आकर्षण होगा, जिसे 19 दिसम्बर को उनके गाँव कुतुबपुर में प्रस्तुत किया जायेगा । इस सत्र में भोजपुरी जगत की एक दर्जन से भी अधिक स्वनामधन्य विभूतियों को प्रदेश के नगरविकास राज्यमंत्री उदित राय सम्मानित भी करेगें । समारोह का समापन भिखारी ठाकुर की जन्मस्थली कुतुबपुर अवस्थित लोक कलाकार भिखारी ठाकुर आश्रम में होगा, जिसमें बड़ी संख्या में भोजपुरीभाषी भोजपुरी नाट्यसम्राट भिखारी ठाकुर की स्मृति में श्रद्धासुमन एवं सांस्कृतिक-कार्यक्रम प्रस्तुत करेगें । शायद उनका वही भाव होगा, जो कभी प्रिंसिपल मनोरंजन प्रसाद सिन्हा ने अपनी मशहूर कविता 'मातृभाषा और राष्ट्रभासा, में इन पंक्तियों में व्यक्त किया था-

जय भारत जय भारती, जय हिन्दी, जय हिंद ।
जय हमार भासा विमल, जयगुरू, जय गोविन्द ।।

ई हमार हऽ आपन बोली । सुनि केहू जनि करे ठठोली ।
जे जे भाव हृदय के भावे । ऊहे उतरि कलम पर आवे ।।

कबो संस्कृत, कबहुँ हिन्दी । भोजपुरी माथा के बिन्दी ।
भोजपुरी हमार हऽ भासा । जइसे हो जीवन के स्वांसा ।।

लोक साहित्य एवं संस्कृति का यह महोत्सव लोकसंस्कृति का संरक्षण और संवर्धन की दिशा में इक्कीसवी सदी में राष्ट्रभक्तों का मार्गदर्शन करने में नीव की ईंट बने, यही कमना है ।

पत्रकार
राष्ट्रीय सहार (दैनिक)
माधव बिहारी लेन, सलेमपुर, छपरा

लोक संस्कृति के पुरोधा पुरूषः भिखारी

डॉ॰ लाल बाबू यादव

लोक भाषा भोजपुरी के विभूति, लोक संस्कृति के सम्वाहक भोजपुरी के विभिन्न लोक विधाओं के प्रणेता लोककलाकार भिखारी ठाकुर विश्व के लगभग बीस करोड़ से ज्यादा भोजपुरी भाषा-भाषियों के हृदय में बसने वाले एक मात्र ऐसे लोक कलाकार है, जिन्होंने न सिर्फ भारतीय ग्रामीण समाज में फैले वर्षो के रूढ़ियों एवं कुरीतियों के विरूद्ध संस्कृति के माध्यम से संघर्ष छेड़ा बल्कि भोजपुरी क्षेत्र के लोगों को स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने दिशा में भी पहला सार्थक प्रयास भी किया। अपने गीतों, नाटको, प्रहसनों एवं नृत्य के माध्यम से एक तरफ जहाँ उन्होंने समाज के निम्न वर्गीय लोगो खास कर अभिवंचितों के बीच पुर्नजागरण का ऐसा संदेश दिया जिसकी बराबरी आज तक किसी अन्य लोक कलाकार ने नहीं की। इस तरह भिखारी ठाकुर अनपढ़ होते हुए भी भोजपुरी के ऐसे पहले कवि है, जिन्हे दलित चेतना को जागृत करने वालों की कोटि में रखा जा सकता है यह एक विडम्बना ही है कि भिखारी ठाकुर के जीवन काल में उन्हे जितना सम्मान प्राप्त नहीं हो सका उससे ज्यादा उनके मरने के बाद भी उनके ऊपर चिन्तन मनन एवं शोध हो रहा है। भिखारी ठाकुर ने स्वयं ही इस सम्बन्ध में कहा था–

"अबही नाम भईल बा थोड़ा।
जब इ छुटी जाई तन मोरा
तेकरा बाद नाम हो जइहन
पंडित कवि सज्जन जस गइहन
नईखी पाठ पढ़ल भाई
गलती बहुत लउकते जाई"।

लोक कलाकार भिखारी ठाकुर का जन्म सन सम्वत 1944, तदनुसार पौष माघ शुक्ल पक्ष के पंचमी तिथि (सन् 1887 ई॰) दिन सोमवार को वर्त्तमान सारण जिले के सदर प्रखण्ड अन्तर्गत कुतुबपुर दियारे में एक नाई परिवार में हुआ था। कुतुबपुर दियारा गाँव आज घाघरा एवं गंगा नदी के संगम स्थल के दक्षिणी भाग में अवस्थित है जो आज इन दोनो नदियों के कटाव से भी प्रभावित है। इस तरह से भिखारी ठाकुर का जन्म हिजरी सन् 1295 में हुआ था जिसे उन्होंने इस रूप में प्रकट किया है।

"बारह सौ पन्चान्वे जहियाँ सुदि पंचमी रहे तहियाँ
पुष्य रोज सोमार ठीक दुपहरियाँ जनम भईल वही घरियाँ"

भिखारी ठाकुर ने अपने पठन-पाठन के बारे में लिखा है, कि उन्हे पढ़ने में अभिरूचि नहीं थी यही

कारण है कि गरीबी से छुटकारा पाने के लिए उन्होने अपनी पुश्तैनी धंधा हजामत बनाना प्रारम्भ किया ।

नौ बरस के जब हम भइनी
विद्यां पढ़न पाठ पर गइनी
बरीस एक तक जबदल मति
लिखो ना आइल राम गति
जब कुछ लगनी माथ कमावें
तब लागल विद्या मन भावे
माथ कमाई नेवती चीहि
विद्या में लागल रहे दीहि
लालसा रहे जे बहरा जाई
आउर छुरा चला कर दाम कमाई

लोक कलाकार भिखारी ठाकुर हिवा पर स्वयं सरस्वती सवार थी उनके मुखार विन्द से जो भी शब्द निकलते थे वे सभी कविता का रूप धारण कर लेते थे । अपने जन्मभूमि कुतुबपुर दियारा तथा जिला मुख्यालय छपरा का परिचय देते हुए उन्होने कहा है, कि -

बबुरा ढोकरिया, घुसरीयाँ, कपुर दियरा,
इंगलिश सिरिशियाँ एकौना एक ग्राम ह,
चैन छपरा, सवलपुर, सुरतपुर, बन्धु छपरा
लगले विशुनपुर विन्दगाँवा असधाम छ
दियरा में दयालचक, चकियाँ, महाजी पश्चिम
कोटवाँ महालता में करत आराम ह,
हाल के मांकाम गंगा के तट माही
कहत चौहदो भिखारी हजाम ह

उन्होंने सारण शहर एवं उसके आसपास के महत्वपूर्ण गाँवों का वर्णन भी न सिर्फ कविता में की है, बल्कि छपरा जिले के सभी महत्वपूर्ण धार्मिक, पौराणिक स्थलों का सजीव चित्रन भी अपनी कविता में इस प्रकार किया है –

"उत्तर रवलपुरा, महराजगंज, दरियावगंज, डोरीगंज चिरान्द गढ़
मोरध्वज के जनावेला. गंगा सरयू पार में अराड़ पर
गोल्टेनगंज, मौजे मखादुमगंज ढ़ंरदुकोश पावेला
शेरपुर घेघटा, रौजा धारू टोला, तेलपा तक, दियरा
के बरूदा टोला नयका कहावेला कहत भिखारी दास

खास शहर छपरा ह, सटेलो नेवाजी टोला पद होई जावेला''

।

भिखारी ठाकुर ने वर्त्तमान सारण जिले के सभी महत्वपूर्ण स्थानों का वर्णन पौराणिक एवं धार्मिक आधार पर करते हुए आज की नई पीढ़ी को सारण के गौरवशाली अतीत का भी स्मरण कराया है ।

सोनपुर से लेकर सिल्हौरी तक छपरा शहर के दहियावाँ, जलालपुर के कुमना रिविलगंज के इनई जैसे स्थानों का सजीव चित्रण भिखारी जैसे लोक कलाकार के वश का ही बात है, किसी अन्य का नही बानगी देखिये–

"हरी के वस्ती नइखे दुर जिला छपरा में सोनपुर
शिलनीधि राजा शिल्हौड़ी घर बीस मोहनी सुता जेकर
हर के घर हुउरे कशमर गंगा गंडक संगम पर
छपरा शहर दहियाव में, रहत दखिणची वीर
तेकर हार धनुष बनल भइल जनकपुर भीड़

दोन दरौली द्रोणाचारज सुमिरत सिद्ध होत सब कारज
कुमना कुम्भज ऋषी के ढाव छपरा जिला में बाटे गाँव

नगर जहांगीरपुर भरपुरा हरीहर के जड़ भरत हुजुरा
इनर इनरासन छोड़ी के, इनई कइलन वास
मूर्गा बोलल मुकडेरा में, गौतम भूमि के पास "

महावीर के अंजनी भईया छपरा जिला के हई रहवइयाँ
छपरा छौ पराजय कारी सोची के करम अपर नामधारी
तब से धाम चिरान्द कहावत लगन चलल ललकारी

भिखारी पुनर्जागरण के कवि थे । विशाल भोजपुरी समाज में फैले कुरीतियों, अंधविश्वासों, बाल विवाह, बेमेवल विवाह, स्त्री उत्पीड़न, संयुक्त परिवारों के विघटन तथा छुआछुत एवं भेदभाव के विरूद्ध संघर्ष का माध्यम उन्होंने अपनी गीतों एवं नाटकों को बनाया । उनके संघर्ष को बहुआयामी स्वरूप देने का काम उनके नाट्य मंडली के कलाकारों के द्वारा ही सम्भव हुआ है । अपने सामाजियों का परिचय देते हुए भिखारी ने लिखा है कि–

बाबू लाल छाँटल बाल भेदहुँ के जानत हाल,
ओसहीं महेन्द्र कुछ ध्रु पद के गवैया हवे ।

अजब रंग ढग बा घिनावन के ढोलक में,

तरह-तरह ताल के तफजूल बजवैया हवे ।
सारंगी सरगम अलीजान के लागत नीक,
हद हरमुनिया के जगदेव बजवैया हवे ।

रामलछन जूठन के भिखारी बताय देत,
खास-खास हास रस नकल के करवैया हवे ।

लोक कलाकार भिखारी ठाकुर ने अपनी लोकप्रियता के शिखर पर पहुँचने के लिए कविता एवं नाट्य पस्तुतियों की लगभग सभी विधाओं को अंगीकरण किया । भरतीय समाज की ईश्वर उपासना के साथ ही समाज की दुखती नस पर हाथ रखते हुए उन्होनें सभी विषयों पर एक साथ समृद्ध रचनायें की। अपनी रचनाओं के बारे में उनहोंने लिखा है कि–

'बिरहा बहार' प्रथम मैं गावा । तब 'कलियुग बहार' सुघि आवा ।।
'राधेश्याम बहार' हो गइलन । 'बेटी वियोग' के चरचा भइलन ।।
'कलियुग प्रेम' हो गइलन पाछे । 'गबर घिचोरन' लगलन आछे ।।
'भाई बिरोध' सोध के गवलीं । 'सिरी गंगा असनान' बनवलीं ।।
'पुत्र-बध' पुस्तक परचार । तजबीज करिहऽ 'नाई बहार' ।।
'ननद भौजी कर संबादू' । 'भाँड़ के नकल' के बुझऽ सवादू ।।
'बहरा बहार' के बरवस देखऽ । 'नवीन बिरहा' नीके परेखऽ ।।
भइल 'भिखारी नाटक' जारी । जे में नकल बा चारि प्रकारी ।
तब ' भिखारी संका समधाना' । साथे-साथे कर सुनहु बखाना ।।
ओहि 'अवसर भिखारी हरिकीर्त्तन' । प्रेम लगाइ कर करिहऽ निरतन ।।
'जसोदा सखी संवाद' सुहावन । तब 'भिखारी चौयुगी' पावन ।।
छपल 'भिखारी जय हिन्द खबर' । बिकरा के नेग सराध में जबर ।।
तब 'भिखारी पुस्तिका सूची' । खरिदनहार के जइसन रूची ।।
पुनि भिखारी चउबरन पदवी । 'विधवा विलाप' के मनिहऽ अदवी ।।
पढ़ऽ 'भिखारी भजन माला' । 'बुढ़साला' के छपल बा हाला ।।
'राम नाम माला' पढ़ि लीजे । 'सीता राम से परिचय' कीजे ।।
'नव अवतार' कहाला नर के । एक 'आरती' दुनिया भर के ।।
'मातु भक्ति' 'श्री नाम रतन', जगह-जगह पर गान ।
सब पुस्तिका समूह में, दीहल बा परमान ।।

रीडर, राजनीति विज्ञान
राजेन्द्र कॉलेज, छपरा

संस्मरण

लोककलाकार भिखारी ठाकुर की सफलता

–प्रो॰ ब्रजकिशोर

भिखारी ठाकुर भोजपुरी के शेक्सपीयर कहे-माने जाते हैं । उन्होंने नाटकों को केवल लिखा ही नहीं, वरन् उन्हें मंच पर स्वयं जीवंत भी बनाया । नाटकों का कथ्य, विषयवस्तु, पाँच, पात्र सबकुछ उन्होंने आम जीवन से लिया, अपने ग्रामीण परिवेश से लिया और मंचन-दर-मंचन उसमें स्वयं ही सुधार भी किया । यही कारण है कि उनके नाटकों का प्रभाव दर्शकों पर काफी गहरा पड़ता था और उनका मन पात्रो के साथ ही हँसता-रोता, नाचता-गाता और आँखों में डूबता-उतराता था । 'भिखारिया के नाच' का सबसे प्रभावकारी अंग उसका 'तमाशा' होता था, नाटक होता था और शुरू के दिनों को छोड़कर भिखारी ठाकुर अपने ही द्वारा रचित नाटकों की ही प्रस्तुति करते थे । नाटकों की प्रस्तुति भी बिना किसी तामझाम के, न प्रकाश की व्यवस्था, न पर्दे की, न नेपथ्य की । सबकुछ दर्शकों के समक्ष और उन्हीं के बीच सहज ढंग से अभिनीत होता था । दृश्य के अनुकूल गायन और मौका निकाल कर हास्य का सृजन भी सहज भाव से होता था । सूत्रधार वे स्वयं होते थे और कुछेक पात्रों का अभिनय भी करते थे। आवाज में टनक भरी होती थी । अपनी मण्डली में जितने लोगों को भिखारी ठाकुर ने शामिल किया था, वे सभी अपने-अपने काम और फन में माहीर थे और उन लोगो को भी जनता के बीच सम्मान और यश मिला था । भिखारी ठाकुर लोकप्रियता की जिस ऊँचाई पर पहुँचे, उसके लिए उन्होंने कठिन परिश्रम किया था, निष्ठा, संकल्प और निरन्तरता के साथ अपनी प्रतिभा का परिमार्जन किया था । उनके नाच के लिए न पर्चे छपते थे, न विज्ञापन होता था । फिर भी भीड़ हजारों-लाखों की जुटती थी और अपनी कला के माध्यम से भिखारी ठाकुर जी कुछ कहना चाहते थे, जनता तक जो भी सन्देश पहुँचाना चाहते थे, जिन समस्याओं की ओर सबका ध्यान खींचना चाहते थे, अपनी कल्पना और मर्यादा का जो आदर्श समाज सृजित करना चाहते थे–सबकुछ साफ और सरल ढंग से उस अपार जनसमूह के मन-मस्तिक में सफलतापूर्वक उतार देते थे । सहज सम्प्रेषण, अभिव्यक्ति की सरलता, भावों का तादात्म्य, अभिनय की लययुक्त गतिशीलता -इन्हीं सबों से मिलकर बनता था भिखारी ठाकुर का जादू जो दर्शकों पर छा जाता था । हवा में तैरते हुए खबर लोगों तक पहुँचती थी और दस-पन्द्रह कोस से चलकर जनता पहुंच जाती थी ठाकुर जी का कमाल देखने और जो एकबार देख-सुन लेता था, बार-बार देखने-सुनने की ललक मन में पाले रहता था । ऐसी थी उनकी लोकप्रियता।

भिखारी ठाकुर जी एक महान लोककलाकार थे, एक विभूति थे, एक महापुरूष थे, सफलतम व्यक्तियों में से अग्रगण्य थे । अपने जीवन काल में ही उन्होंने काफी यश अर्जित किया, लाखों लोगों के हृदय में अपने लिए आदर और अपनत्व पैदा किया किन्तु अपनी अपार सफलता और लोकप्रियता को जान समझकर भी अहंकार नहीं किया । बहुत ही सरल, सहज और भोले-भाले इन्सान बने रहे अन्त तक। निश्छल प्रकृति थी उनकी और किसी से भी, कहीं भी कुछ सीखने की प्रवृति उनकी बनी रही।

एकबार मैं पटना आ रहा था गाँव से । मेरे गाँव माधर से छः सात मील पर है मशरक स्टेशन। मैं जिस डिब्बे में चढ़ा उसमें भिखारी ठाकुर जी बैठे थे । बिल्कुल सामान्य वेश-भूषा में, बिल्कुल गाँव के एक ठेठ बुर्जुग की तरह । यों मैं सीवान में हुए भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के मंच पर उन्हें देख चुका था और उस मंच से उनके ही मुँह से ननद-भौजाई संवाद भी सुन चुका था किन्तु डब्बे में बैंठने के बाद भी मैंने कोई ध्यान नहीं दिया उनकी ओर । मढ़ौरा स्टेशन पर गाड़ी रूकी तो उन्होंने सामने चिनिया बादाम बेंच रहे एक नवजवान खोमचे वाले को पुकारा । खोमचे वाले की निगाह जैसे ही उनपर आई, उसका चेहरा खिल उठा और वह खोमचा छोड़कर लपकते हुए उनके पास पहुँचा और बड़े आदर से प्रणाम किया। उस बुजुर्ग ने आशीर्वाद देते हुए पूछा-' बबुआ, तू.....के जानत बाड़ ? अरे ऊहे जे भिखरिया के नाच में बाड़े ।'

''जी, हम जानत बानीं उनका । कुछ कहे के बा का ?''

''हँ, कह दिह तनी कि आज नाच फलाना गाँव में बा, साँझ ले पहुँच जइहँ ।''

''जी, हम अबहिये जाके कह देत बानी ।''

और वह खोमचा वाला बिना बिलम्ब किए खोमचा स्टेशन के प्लेटफार्म पर ही छोड़कर बाहर की ओर लगभग दौड़ते हुए निकल गया । उसे अपने खोमचे में पड़े चिनियाबादाम की चिन्ता नहीं हुई। वह एक गरीब व्यक्ति था और उसी चिनियाबादाम की बिक्री से उसका और उसके परिवार क लोगों का पेट भरता होगा । फिर भी वह इस बुजुर्ग के कहने मात्र से सब छोड़कर इनका सन्देश पहुँचाने चला गया। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ । कौन है यह बूढ़ा व्यक्ति ? खिड़की से सिर निकलते ही अनेक व्यक्ति डब्बे के सामने आ खेड़े हुए और निकालते ही अनेक व्यक्ति डब्बे के सामने आ खड़े हुए और आदर के साथ उन्हें प्रणाम किया । मैने उन्हें ध्यान से देखा । लगा कि कहीं देख है । फिर अचानक बिजली सी दिमाग में कौंधी । सीवान मंच पर देखा हुआ चेहरा याद आया । अरे, ये भिखारी ठाकुर जी तो नहीं हैं ?

मैं उनकी ओर पल पर देखता रहा । गाड़ी खुल चुकी थी । घूरते हुए देखकर उनकी नजर भी मेरी ओर खींच गई । मैं पूछा- आप....!'

'जी, बबआ जी; हमरे नाँव भिखारिया ह ।' उन्होंने काफी विनम्रता और सहजता से सिर

झुकाकर जबाब दिय । 'मैं ही भिखारि ठाकुर हूँ' ऐसा कोई भाव चेहरे पर नहीं दिखा । 'भिखारिया' में जो विनम्रता थी, वह उनके शालीन मुखमण्डल से टपकती-सी प्रतीत हुई ।

- आपको विश्वास है कि वह खोमचा वाला आपका सन्देश आपके आदमी तक अवश्य पहुँचा देगा ? मैंने पूछा ।

-"हाँ, बाबुआ जी । आपने देखा नहीं कि वह किस तत्परता से खबर पहुँचाने चला गया । लोग बहुत प्यार करते हैं इस भिखारिया से । यही नेह मेरी जिन्दगी की कमाई है बबुआ !" कुछ देर के लिए वे मौन हो गए । एक परम सन्तोष की चमक चाँदनी की तरह उनके चेहरे पर पसर गई । अपार यश अर्जित करने वाला, खूब धन कमाने वाला, अपनी कला के कारण सब का आदर पाने वाला यह बुजुर्ग आदमी सचमुच कितना विनम्र और निश्छल है ।

उन्होंने मेरे बारे में भी जानना चाहा और यह जानकर कि मैं पटना इंजनियरिंग कॉलेज में पढ़ता हूँ काफी खुश हुए । फिर मेरी ओर देखकर पूछा-' बबुआ जी, एगो बात पूछीं ?

-'जरुर पूछी ।'

-' अभिनन्दन ग्रन्थ का कहाला ? कुछ लोग चाहत बा कि हम कुछ खरचा के इन्तजाम कर दीं त हमरा पर एगो अभिनन्दन ग्रन्थ निकालल जाई ।"

मैंने उन्हें समझाया कि अभिनन्दन ग्रन्थ क्या होता है ओर यह भी बतलाया कि आजकल लोग अपना ही धन लगा कर अपने को सम्मानित करवाते हैं, अपना अभिनन्दन करवाते हैं और गोष्टिठयों का आयोजन कराकर अपनी प्रशंसा सुनकर संतुष्ट होतें हैं । फिर कहा कि "ठाकुर जी, आपका अभिनन्दन तो बनारस से लेकर कलकत्ता तक की जनता दिल खोलकर करती है; । बड़े-बड़े से अमीर आपकी महफिल में ले जाने के लिए लाइन लगाकर खड़े रहे हैं । आगे आने वाला समय भी आपका अभिनन्दन करता रहेगा । आपके रचे गीत तो लोककंठ में लोकगीतों की तरह रच-बस गए हैं । हर लगन के दिन तो आपके नाटकों को देखकर हजारों दर्शक तो आपका अभिनन्दन करते ही हैं । आपके गीत ओर आपके नाटक ही आपके अभिनन्दन ग्रन्थ हैं ।"

-"ह बबुआ जी, रटआ ठीक कहत बानी । भला अइसन खरच-बरच करके अभिनन्दन ग्रन्थ छपववला से का होई ।"

मैं फिर एकबार उनकी सहजता और सरलता पर चकित हुआ लेकिन एक बात समझ में आई कि निरन्तर कुछ जानने-सीखने की और अपनी कला को माँजते रहने की यह विनम्र प्रवृत्ति ही उन अनेक कारणों में से एक महत्वपूर्ण कारण है, जो किसी कलाकार को, भिखारी ठाकुर जैसा महान लोकप्रिय कलाकार बना देती है । कलाकार में स्वाभिमान की प्रचुरता तो होनी चाहिए किन्तु स्वाभिमान अहंकार और तुनुक मिजाजी का पर्यायवाची नहीं है । सफल व्यक्ति में जो आत्मतुष्टि होती है, वही

उसके लिए सच्चा पुरस्कार है, सुख है और वही उसका सच्चा अभिनन्दन भी है ।

अर्ल नाइटिंगल ने सफलता को परिभाषित करते हुए कहा है- 'Success is the progressive realization of a worthy goal. "एक समुचित लक्ष्य की प्रगतिशील अनुभूति या उलब्धि ही सफलता है ।" इस परिभाषा पर विचार करें तो सफलता के अनेक पहलू स्पष्ट हो जाते हैं । 'प्रगतिशी' शब्द बतलाता है कि सफलता कोई स्थिर मंजिल नहीं है । यह गतिशील है, एक यात्रा की तरह है । जब हम एक लक्ष्य तक पहुँचते हैं, तो दूसरा लक्ष्य सामने आ जाता है । इसी तरह 'अनुभूति' शब्द इंगित करता है कि सफलता एक भावनात्मक संवेग है, जिसे हम अन्तःकरण में महसूस करते हैं । यह आन्तरिक है, बाह्य नहीं है । हम किसी भी अनाप-शनाप लक्ष्य की प्राप्ति को सफलता नहीं मान सकते क्योंकि इस 'लक्ष्य' को 'उचित' होना चाहिए । उचित या अनुचित होना भैतिक मूल्यों पर आधारित होता है । किसी शुभ विचार और धनात्मक मूल्यों पर आधारित होता है । किसी शुभ विचार और धनात्मक सोच में जुड़ा हुआ लक्ष्य हीं उचित हो सकता है । विकास की जगह विकाश लानेवाला लक्ष्य अनुचित और अनैतिक कहा जाता है । औचित्य सफलता उससे प्राप्त मंगलकारी सन्तुष्टि में होती है । इसे सभी स्वीकर करें, यह आवश्यक नहीं है । कुछ लोगों की आलोचना से कोई फर्क नहीं पड़ता । वस्तुतः सफलता एक सौभाग्य है, जो प्रेरणा, महत्त्वाकांक्षा, उत्कट लालसा और कठिन श्रम का परिणाम होती है । सफलता और सुख एक-दूसरे के पूरक है ।

भिखरी ठाकुर एक सफल कृतिकार थे, सफल लोककलाकार थे, सफल नाटकार थे, सफल अभिनेता थे, और एक सफल निश्छल इन्सान थे । उन्होंने अपनी कला को उत्कृष्ट बनाने के लिए लगातार चेष्टा की । लोगों के विरोध की चिन्ता नहीं की । अपनी पुश्तैनी पेशा को छोड़कर नाचने-गाने का धन्धा अपनाना जिसे लोगो ने अच्छा नहीं माना किन्तु भिखारी लगे रहे अपने काम में । कलकत्ता प्रवास में यात्रा दलों ने इन्हें प्रभावित किया । समाज में व्याप्त अनेक विसंगतियों, कुरीतियों और अन्ध विश्वासों पर ठाकुर जी ने अपने नाटकों में प्रहार किया है । दहेज प्रथा, बेमेल विवाह, विधवा विवाह, भाई-भाई में द्रोह, धन लोलुपता, अशिक्षा, राजी-रोटी के लिए परदेश गममान, ऊँच-नीच का विचार, गरीबी, आदि अनेक ज्वलन्त समस्याओं को ठाकुर जी ने अपने नाटकों में उठाया है और उसके लिए विवेक सम्मत समाधान भी प्रस्तुत किया है । दर्शकों पर उसका असर भी पड़ा । समाज को सुन्दरता बनाने के लिए ठाकुर जी ने प्रसास किया अपनी कला के माध्यम से । लोकरंजन के साथ मंगलसृजन भी उनका लक्ष्य था । इस समुचित और औरचित्यपूर्ण लक्ष्य की प्राप्ति उन्हें हुई । इस दृष्टि से उन्हें सफल रचनाकार मानने में किसी को हिचक नहीं होनी चाहिए ।

सफलता की माप उस अनुभूति से होती है, जो कार्य को अच्छी तरह निष्पादित करने के बाद और उद्देश्य की प्राप्ति के बाद होती है । इसकी माप पद और ओहदे की ऊँचाई से नहीं, वरन् वहाँतक

पहुँचने के लिए पार की गई बाधाओं से होती है । सफल लोग स्वयं अपना ही प्रतियोगी होते हैं और अपने ही पूर्व के रिकार्ड को तोड़ते हैं । ठाकुर जी के नाटकों में और उनके गीतों में भी उत्तरोत्तर उकृष्टता आई है । जब हम कार्य का निष्पादन करने में लगे होते हैं तो भीतर से एक सुख का अनुभव होता है, एक गर्व की अनुभूति होती है । यह अनुभूति हमारे प्रसास और कठिन परिश्रम से होती है। यह अनुभूति हमारे प्रसास और कठिन परिश्रम से होती है । यह अनुभूति हमारे और कठिन परिश्रम से उपजती है । कार्य में उत्कृष्टता तभी आनी है जब कर्त्ता उसे करने में गर्व का अनुभव करता है क्योंकि तभी वह अपनी पूरी क्षमता उसके निष्पादन में झोंक देता है । इससे मिलने वाला सुख अपने आप में सबसे बड़ा पुरस्कार है जो किसी भी कार्य को अच्छी तरह निपटाने का धैय, हुनर, यश और गर्व प्रदान करता है । कार्य का सुख, कार्य, निष्पादन का गर्व आन्तरिक होता है और इससे उत्साह तथा स्फूर्ति का जन्म होता है । इस गर्व को अहंकार (इगो) नहीं मानना चाहिए । इससे विनम्रता और आनन्द का बोध होता है । काम में मन की पूरी संलग्नता ही कार्य सुख देती है । भिखारी ठाकुर जी में यह संलग्नता थी और हर मंचन के बाद उन्हें इस सुख और आनन्द की अनुभूति होती थी । अपने काम के प्रति उनमें गौरव का भाव था । इस गर्व ने उन्हें अहंकारी नहीं बनाया वरन् वे अतिशय विनम्र होते चले गए । यही विनम्रता और सहजता उनके व्यवहार में झलकती थी । वे अपने साथ काम करने वाले प्रत्येक कलाकार के प्रति उदार थे और उनकी पारिवारिक समस्याओं का समाधान भी अपने ढंग से करते थे । इसीलिए पूरी मण्डली मनोयोग पूर्वक अपना काम करती थी । हर प्रस्तुति इसीलिए लोगों के लिए एक यादगार प्रस्तुति हो जाती थी । कुछ लोगों ने भिखारी ठाकुर की नकल भी की लेकिन वह कमाल कहाँ से लाते । गरोह के लोग ठाकुर जी को 'मल्लिक जी' कहा करते थे । भोजपुरी क्षेत्र में घर के मुखिया को 'मलिकार' और 'मालिक' कहा जाता है । यहीं मालिक शब्द मल्लिक बन गया होगा ।

एक सफल व्यक्ति में, चाहे वह किसी भी क्षेत्र में सफल हो, कई गुण अपेक्षित होते हैं जैसे इच्छ और इच्छाशक्ति, संकल्प और निष्ठा, उत्तरदायित्वबोध, कठिन श्रम एवं कार्य करने की क्षमता, उत्कृष्ट चरित्र धनात्मक विश्वास, पाने से अधिक कुछ देने की ललक, निरन्तर की शक्ति, कार्य का गर्व, सदैव सीखने की तत्परता आदि । इस दृष्टि से भी भिखरी ठाकुर एक सफल व्यक्ति भी थे । वे एक नेक इन्सान थे और चाहते थे कि समाज में सब कोई सुखी हो और कहीं भी नफरत औ हिंसा न हो । इसका सन्देश उनके नाटकों से मिलता है ।

सफलता और शोतरत के ऊँचे शिखर पर आसीन हो जाने के बाद भी भिखारी ठाकुर में जो विनम्रता, सहजता और निश्छलता की उसका एक कारण उनका भक्ति भाव भी था । उन्होंने शिव जी की, गंगा जी की, रामजी की स्तुतियाँ लिखी है । दत्तचित होकर गाते थे । मढ़ौरा से गाड़ी खुलने पर

उनके श्रीमुख से शिव-स्तुति सुनने का मौका मुझे मिला है । सिल्हौरी में शिव जी का प्रसिद्ध मन्दिर है। स्वर और भाव की तन्मयता बतलाती थी कि स्तुति के छन्द उनके हृदय से निकल रहे हैं, कंठ से नहीं। 'बिदेसिय' उनकी सुप्रसिद्ध नाट्यकृति है । अब यह एक शैली और परम्परा का रूप ले चुकी है। ठाकुर जी स्वयं ही सूत्रधार के रूप में इस नाटक की प्रस्तुति के पूर्व दर्शकों को बतलाते थे कि बिदेशिया का आध्यात्मिक-दर्शनिक महत्त्व भी है । इसमें बिदेशी (नायक) ब्रह्म है और प्यारी सुन्दरी (नायिका) जीव है । जीव ब्रह्म का अंश है, उसीका अंग है । प्यारी सुन्दरी बिदेशी की व्याहता है लेकिन गौना के तुरन्त बाद ही बिदेशी कमाने के लिए परदेश चला जाता है जहाँ रखेलिन के वश में होकर उसी के साथ रहने लगता है । यही माया है जो जीव का मिलन ब्रह्म से नहीं होने देती । बटोही धर्म है, जिसका आश्रय लेकर प्यारी सुन्दरी (जीव) फिर से विदेशी (ब्रह्म) को पा लेती है और पीछे से आकर रखेलिन (माया) भी साथ-साथ रहने लगती है । धर्म जीव, ब्रह्म और माया के बीच समन्वय करता है जिससे जीवन में सुख पैदा होता है ।

भिखारी ठाकुर जी बहुत पढ़े-लिखे नहीं थे किन्तु कवि होने के लिए एम. एम. ए., डी. लिट. होने की जरुरत नहीं होती । सरस्वती की अपार कृपा थी । भोजपुरी भाषा उनकी मातृभाषा थी और उसकी अद्‌भूत अभिव्यंजना शक्ति तथा धारदार तेवर ने उनकी अभिव्यक्ति को प्रवाहमय बना दिया है। उनके गीतों-कवित्तों में शब्द सहज ढंग से आये हैं लेकिन उनमें चकितकारी लय और अर्थ-व्यंजना निहित है ।

भोजपुरी भाषा को भिखारी ठाकुर ने समृद्धि प्रदान की है । भोजपुरी संस्कृति समाज और यहाँ की माटी से उन्हें बहुत लगाव था, बहुत प्रेम था । सारण ने अनेक रत्न दिया है देश को । भिखारी ठाकुर भी एक ऐसे ही रत्न थे जिनपर भोजपुरी भाषा को गर्व है ।

संपादक
भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका
श्री भवन, महम्मदपुर लेन,
महेन्द्रू, पटना -04

भारतीय नवजागरण और भिखारी ठाकुर

–जीतेन्द्र वर्मा

अंग्रेजी के शासनकाल में कूपमंडूक भारतीय समाज का संपर्क आधुनिक ज्ञान-विज्ञान से हुआ,

यहाँ के सामाजिक जीवन में कई अमानवीय कृत्य, हास्यास्पद और अवैज्ञानिक परंपरओं को धार्मिक मान्यता प्राप्त था और आज भी है । अंग्रेजो के शासन के फलस्वरूप ही सत्ती प्रथा पर प्रतिबंध लगा, विदेश यात्रा को स्त्रीकृति मिली, स्त्री और शूद्र को शिक्षा मिलना संभव हो सका तथा समाजसुधार के ऐसे बहुत से कार्य हुए यहाँ यह बात उल्लेखनीय है कि ये सारे बदलाव सिर्फ कानून के बल पर नहीं हुए इसके पीछे कई समाज-सुधारकों का महान योगदान है ।

बंगाल सबसे पहले अंग्रेजों के संपर्क में आया । कहा जाता है कि संपर्क से संस्कार बनता है या बिगड़ता है अंग्रजो के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान से भरा पश्चिमी विचार भी आया, जो बुद्धिवाद, तर्क प्रधान तथा सामाजिक समता के संदेश से भरा था । यही कारण है कि बंगाल में सबसे पहले नवजागरण संभव हो सका । देश के अन्य भागों में जैसे-जैसे पश्चिमी विचारों का प्रचार-प्रसार हुआ वैसे-वैसे ही समाज-सुधार की भावना का अंकुरण हुआ । सन् 1829 का वर्ष भारतीय नवजागरण के इतिहास में अविस्मरणीय है । इसी वर्ष लार्ड विलियम बैंटिक ने सती प्रथा पर रोक लगाने के लिए कड़ा कानून बनाया जनमानस को सती प्रथा के विरोध में खड़ा करने में राजा राममोहन राय का बड़ा योगदान है ।

सामाजिक कुरीतियों को धर्म का कवच प्राप्त रहता है । लोक जीवन में वे धर्म का पर्याय माने जाते है । इसी कारण गलत जानकर भी जल्दी कोई उनके खिलाफ, सोचने, बोलने और आचरण, करने के लिए तैयार नहीं होता । कुछ कुरीतियाँ ऐसी भी है जिन्हें शास्त्रीय स्वीकृति नहीं है वे तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक आदि परिस्थितियों की जरूरत के मुताबिक उपजती है और धीरे-धीरे जन सामान्य के जीवन में इतने मजबूती के साथ जड़ जमा लेती है कि परिस्थिति बदल जाने पर भी उसका प्रचलन यथावत बना रहता है । यहाँ यह बतलाना आवश्यक नहीं है कि ऐसा धर्म के ओट में संभव हो पाता है ।

ऐसी ही एक सामजिक कुरीति थी - "बेटी बेचवा" की जो आर्थिक विवशता और नारी को वस्तु समझने की परंपरागत प्रवृत्ति से उपजी थी । दहेज का सुरसा की तरह मुहँ और बेटीवाले की

कंगाली तो अभी भी है पर तब बेटी बेचने का रिवाज ही बन गया था । बेटी बेचवा प्रथा के कारण बेमेल विवाह हुआ करते थे ।

भिखारी ठाकुर ने अपने ''बेटी वियोग'' नाटक में बेची गई बेटी का ऐसा हृदयद्रवक चित्र उतारा कि पत्थर का बना भी बाप का छाती फट जायेगा बेची गई बेटी का दर्द भिखारी ठाकुर के नाटकों में यथार्थ रूप में व्यक्त हुआ है -

''रोपया गिनाई लिहल, पगहा धराई दिहल
चेरिया के छेरिया बनवल हो बाबू जी''

हिन्दू संस्कृति में बेटी को गाय माना जाता है, उसे जिस खूंटा में मन हो बांध दीजिए, वह बोलेगी नहीं और बोलेगी कैसे, बोलेगी तो ''धर्म'' न टूटेगा !

शादी के बाद बेची गयी बेटी के दुर्गति का मार्मिक चित्र उनके ''बेटी वियोग'' नाटक में देखा जा सकता है बेची गई बेटी के पास जब उसके पिता जाते हैं तो वह अपनी दुःखद स्थिति बताती प्रश्न करती है-

''बूढ़ वर से कइल वियाह, बेटी ना रखल
खेयाल
एरूब के कवन कसूर हो बाबू जी
कफ से भर बा नाड़ी, रात दिन होखेला जाड़ी
हिलिया काछत दिनवा बीतेला हो बाबू जी''

यह स्थिति किसी एक स्त्री को न होकर बूढ़े मर्द के साथ बेची गई सभी स्त्रियों की है । भिखारी ने कही कबीर के तरह प्रहार नहीं किया, किसी को भला-बुरा नहीं कहा । दुःख-दर्द को लोगों के सामने रख दिया । वह दुःख दर्द कमोवेश सबका था । कहने का ढंग इतना प्रभावशाली था कि लोग कुछ सोचने और करने को विवश हुए । यही उनकी बड़ी विशेष है । बेची गई बेटी की करूण कथा देखकर निर्दयी बाप के हृदय में अपराधबोध का भाव उमड़ा होगा । एक बार, दो बार नहीं कई-कई बार लोग नाटक देखते इसका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था । आम आदमी समाज-सुधार की भावना से उनका नाटक देखने नहीं जाता था । वह जाता था मनोरंजन के लिए पर अचेतन में उसे बेटी बेचवा प्रथा से घृणा होते जाती ।

उन्होंने अपने नाटक को हथियार बनाया । कोई भी नियम-कानून तभी लाभकारी हो सकता

है जब उसका पालन हो । सिर्फ कानून बना देने से उसका पालन नहीं होता । राजा राममोहन राय सहित कई अन्य समाज सुधारकों ने सती प्रथा के अमानवीय कृत्य की ओर ध्यान दिलाते हुए इसे बंद कराने की पृष्ठभूमि तैयार की । इसके बाद भी सती प्रथा पर रोक लगाने के लिए कड़ा कानून बना कर कठोरता से इसका पालन कराना पड़ा । इस सब के तुलना में भिखारी ठाकुर ने बड़ी सहजता से "बेटी-बेचवा" प्रथा का नाश कर दिया । यद्यपि इसकी एक वजह यह भी हो सकती है कि सती प्रथा के तुलना में यह प्रथा छोटे क्षेत्र में प्रचलित थी तथा इसे धर्म का पूरा संरक्षण नहीं मिला था । भिखारी ने अपने नाटकों के माध्यम से जनता का हृदय परिवर्तन कर दिया । परंपरागत मूल्यों को, भले ही वे गलत क्यों नहीं हो, त्यागने के लिए व्यापक पैमाने पर लोगों को तैयार करना अपने आप में ऐतिहासिक कार्य है ।

भिखारी के नाटकों के लोकप्रिय होने का एक महत्वपूर्ण कारण यह भी है कि उसमें आम आदमी कही-न-कही अपना चेहरा देख लेता है, अपने परिवेश, परंपरा, विश्वास, संस्कार, खान-पान पर्व-त्योहार और मनः संघर्ष का चित्रण पाता है । "बेटी-वियोग" में बारात ठीक उसी ढंग से लड़की वाले के दरवाजे पर लगती है जैसे ग्रामीण क्षेत्रों में होता है, स्त्रियाँ परिछावन के लिए आती है और बूढ़े दुल्हा को देखकर उसका रूप बखनती है

चलनी के चालल दुल्हा, सूप के झटकारल हे
दिअका के लागल वर, दुअरा बाजा बाजल हे
आँवा के पाकल दुलहा, झाँवा के झारल हे
कलछुल के दागल, बकलोलपुर से भागल हे
....
आम लेखा पाकल दुलहा, गाँव के निकालल हे
अइसन बकलोल वर, चटक देव के भावल हे"

यह गीत भिखारी ने नाटक में कथानक के अनुसार वातावरण बनाने के लिए अपने बनाया है परन्तु इसका लय और धून एकदम वही है जो गाँवों में दरवाजे पर बरात लगने के समय गाये जाने वाले परंपरागत गीतों का होता है, लोक जीवन से निकटता का ऐसा उदाहरण उनका पूरा साहित्य है ।

उनका नाटक देखने के लिए खूब भीड़ उमड़ती थी । यह भीड़ स्वतःस्पूर्त होती थी । इस संबंध

में में राहुल सांकृत्यायन का विचार है-

"लोगों को क्यों अच्छा लगता है भिखारी का नाटक क्यों दस-दस, पन्द्रह-पन्द्रह हजार की भीड़ होती है इन नाटकों को देखने के लिए मालूम होता है कि इन्हीं नाटकों में पब्लिक को रस मिलता है । जिस चीज में रस मिले वही कविताई है । किसी का अगर लंबा नाक हो और वह सिर्फ दोष ही सूंघते फिरे तो उसके लिए कहा जाय ।"

भीड़ जमा करके उसे अपने मनोनुकूल मोड़ । देने की कला उन्हें मालूम थी । उनके नाटकों में परंपरा और परिवर्तन का समन्वय सर्वत्र दिखाई देता है उनके नाटकों में एक तरफ देवी-देवता की स्तुति, चमत्कार और लोक-जीवन में प्रचलित मान्यता, विश्वास आदि मिलते हैं तो दूसरी तरफ बेटी बेचवा प्रथा, विधवा दुर्दशा, बेमेल विवाह, नशापान जैसे कुरीतियों से होने वाले हानियों से लोगों को अवगत कराया। लोग प्रचलित परम्पराओं की आलोचना सुनना, करना नहीं चाहते, भिखारी ने बिना लोक जीवन के आस्था-विश्वास पर चोट किए कई परंपरा से उन्हें विमुख कर दिया ।

हिन्दू समाज में पहले विधवाओं की बड़ी दुर्दशा होती थी, शास्त्रीय मान्यता के अनुसार स्त्री द्वारा पूर्वजन्म में किए पाप के कारण पति मर जाता है और वह विधवा हो जाती है । भिखारी की नजर विधवा समस्या पर भी गई । "विधवा-विलाप" नाटक में उन्होंने इस समस्या की ओर लोगों का ध्यान खींचा ।

पहले विधवा हो जाने पर स्त्री के दुःखों को ओर छोर नहीं था । सिर मूड़ा के रहना, एक समय खाना, खास रंग का कपड़ा पहना, किसी मंगलकार्य में भाग नहीं लेना, घर के किसी कोने में उपेक्षित होकर पड़े रहना- जैसे अनेक अनगिनत अमानवीय बंधन थे । सनातन धर्म के व्यवस्था मे विधवा हो जाने पर स्त्री का पति के संपति पर कोई अधिकार नहीं था । इसी कारण विधवा हो जाने पर स्त्री का जीवन नरक तुल्य हो जाता था । पति को मरते ही स्त्री का न तो मायंके में । मान-मर्यादा मिलती न ससुराल में इसी सच को भिखारी ने अपने "विधवा विलाप" नाटक में चित्रित किया । इसमें पति के नहीं रहने पर औरत को भर्ताजा तरह-तरह के कष्ट पहुंचाता है ।

भिखारीयुगीन विधवा समस्या की हद तक बेमेल विवाह से जुड़ी थी, पिता के उम्र में के मर्द से शादी, फिर विधवा और उसके बाद पूरी जिन्दगी उपेक्षा, अपमान और घृणा के बीच काटने की विवशता- इस तमाम स्थितियों से गुजरते हुए नारी का असली रूप उनके नाटकों में दिखता है ।

संप्रति "गबरघिचोर" उनका सबसे अधिक मंचित होने वाला नाटक है । इसमें यह स्थापित किया गया है कि संतान पर सबसे अधिक अधिकार माँ का होता है । पुरूष प्रधान समाज में यह स्थापना क्रान्तिकारी है ।

उनके अधिकांश नाटकों में नारी समस्या को उजागर किया गया है । नारी मनोविज्ञान के चित्रण में उन्हें काफी हद तक सफलता मिली है, आज जब विश्व भर में नारी मुक्ति का संघर्ष चल रहा था तब उनकी याद अस्वाभाविक नहीं है ।

नशापान भी एक सामाजिक कुरीति ही है । इसे भी धर्म से जोड़ दिया गया है । गांजा, भांग शंकर का प्रिय आहार माना जाता है । आज भी गाँवों में ओझा-गुनी भूत भगाने के लिए देवी-देवताओं को शराब चढ़ाते हैं । भिखारी ने अपने "कलयुग प्रेम" नाटक में नशा के सेवन करने से होने वाले हानियों को घटनाओं के माध्यम से चित्रित किया है । नशा का लत लगने से व्यक्ति किस तरह अपना कर्त्तव्य, लोक-लाज सब भूल जाता है, परिवार छिन्न-भिन्न हो जाता है- इस सब का यथार्थ रूप इस नाटक में मिलता है ।

भिखारी ठाकुर की भाषा भोजपुरी है । उनकें साहित्य का अधिकांश हिस्सा आज उपलब्ध नहीं है । उनके किताब समय-समय पर दूधनाथ प्रेस, सलकिया हवड़ा कोलकता से प्रकाशित हुए थे । जो अब लुप्त हो गये है । उनके बाद उनका साहित्य नाट्यमंडली, श्रोता, प्रशंसक के कंठ में उनका था जो काल के गाल में समा गया । लोक कलाकार भिखारी ठाकुर आश्रम (कुतुबपुर) सारण ने उनके दस नाटकों का प्रकाशन "भिखारी ठाकुर ग्रन्थावली" भाग-1 और भाग-2 नाम से किया था । वह भी अब अनुपलब्ध है, इसके अलावे उनका बहुत सारा साहित्य अप्रकाशित है । यह भी एक विडंबना है कि आज एक तरफ भिखारी ठाकुर की मूर्त्ति बनवायी जा रही है पर दूसरी तरफ उनके कृर्ति का मूल आधार उनका साहित्य समाप्त हो रहा है ।

राहुल सांकृत्यायन ने उन्हें "भोजपुरी का शेक्सपीयर" और "अनगढ़ हीरा" की संज्ञा दी तो जगदीशचंद माथुर ने भरत मुनि के परंपरा में बताया है । यद्यपि भिखारी ठाकुर को "भोजपुरी का भारतेन्दु हरिशचन्द्र" कहना अधिक उचित प्रतीत होता है क्योंकि वे अपने रूढ़िमुक्त और प्रगतिशील दृष्टिकोण के कारण भारतेन्दु के नजदीक है ।

वर्मा ट्रांसपोर्ट
राजेन्द्र पथ
सीवान-841226

खेती-बारी, गहना तूं बेच देल निसा खातिर
घरे नइखे छीपा के ठेकान पियउफ निसइल ।
भिखारी ठाकुर, कलियुग प्रेम

अनुभव

भिखारी ठाकुर पर उपन्यास 'सूत्रधार' लिखते समय जैसा मुझे लगा

–संजीव

वह एक युग था !

सन् 57 के सिपाही विद्रोह के अवसाद और ब्रिटिश-शासन, स्वाधीनता आन्दोलन, सामाजिक नवजागरण काल से स्वातंत्रयोतर काल के सातवें, आठवें दशक तक का काल ! सभी प्रदेशों में , सभी भाषाओं में और प्राय: सभी क्षेत्रों में एक से बढ़ कर एक विभूतियां ! पराभव, नवोन्मेष, संघात, संक्रमण और कहीं-कहीं अतिक्रमण तक पूरा होता है यह काल चक्र ! पुरानी भीतें (दीवारें) गिर रही थीं नई भीतें उठ रहीं थीं ।

संक्रमण और संघात के घटना-बहुल इस युग में गँवई चेतना का भी एक उभार आया था, जिसे प्राय: अनदेखा कर दिया गया । साहित्य, कला और संस्कृति में इस गंवई चेतना ने कतिपय ऐसे स्थलों को भी अपना उपजीव्य बनाया, जहां साहित्य की नजर तक न कुलीन हिन्दी भारतीय किसानों की गई । गदर के शौर्य मजदूरों की हूक तत्कालीन दुर्दशा, गिरमिटिया अवधी तथा अन्य बोलियों भोजपुरी और हिन्दी में नहीं । में ही सुलभ है

> *"भिखारी ठाकुर पर औपन्यासिक विस्तार में जाते हुए मुझे वह देश-काल हमेशा घेरे रहा । अपनी सीमा मे भिखारी को ही नहीं जी रहा था, बल्कि उस युग को भी..... । यह सब एक गुरू ऋण से उऋण होने के उपक्रम जैसा भी था,''*

वह एक युग था ! छपरा की पतुरिया गुलाबों मुजफ्फरपुर की ढेलाबाई, बहने भुनिया बाई मीरगंज (गोपालगंज) की और दुनियाबाई का युग ! बटेली के पं० राधेश्याम कथावाचक, मुरादाबाद के मास्टर फिदा हुसेन नरसी का युग ! बनारस के नर्तक शंकर डांसर, मुकुन्दी भांड़, छपरा के महेन्दर मिसिर, सीवान के रसूल और दरबारी गिरि, फकुली के बसुनायक सिंह, छपरा के कीर्तनिये, बक्सर के पं० द्विजराम पाठक, दुर्जर राय, सोहरा के चाँदी सिंह.....और भी जाने कितने जगमगाते नक्षत्रों का युग जिनमें से ज्यादातर इतिहास में दर्ज हुए बिना ही अस्त हो गये ।

हिन्दी में भारतेन्दु, रामचन्द्र शुक्ल, प्रेमचन्द आदि से लेकर प्रसाद, निराला पंत आदि और शिवपूजन सहाय, दिनकर तक और भोजपुरी हिन्दी के सेतु के संदर्भ में राहुल सांकृत्यायन, रघुवीर नारायण सिंह, रामेश्वर सिंह कश्यप (लोहा सिंह), स्वामीनाथ सिंह, हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' गणेश चौबे आदि तक फैला हुआ अनेकानेक दिगपालों और दिगदर्शकों का युग !

भिखारी ठाकुर इसी युग के, भोजपुरी भाषा के सबसे चहेते, सबसे जगमगाते सितारे थे, जिनके

सौरमंडल के ग्रहउपग्रहों तक की कथाएँ भी मिथक बनती गई । ये सभी 'नान्ह जातियों' और निचले वर्ग के कुछ बड़ी जातियों के लोग थे । उपेक्षा के अपने-अपने दलदलों से ऊपर उठ कर इन नान्ह और उपेक्षित कलाकारों ने गीत-संगीत, नृत्य और अभिनय के क्षेत्रों में कहीं-कहीं तो विशिष्ट से विशिषट और विरल से विरल प्रयोग किये । सतह से ऐसे ही ऊपर उठता है आदमी !

भिखारी ठाकुर पर औपन्यासिक विस्तार में जाते हुए मुझे वह देश-काल हमेशा घेरे रहा । अपनी सीमा में भिखारी को ही नहीं जी रहा था, बल्कि उस युग को भी.....। यह सब एक गुरू ऋण से उऋण होने के उपक्रम जैसा भी था, उद्देश्य यह भी रहा कि उस काल के अनेक दिग्गजों की तरह कहीं वे भी न बिसरा दिये जांय, यद्यपि मैंने देखा कि रामदास राही, भिखारी परिवार, भिखारी ठाकुर शोध संस्थान, कुतुबपुर और बिहार सरकार के अंदर और बाहर बहुत से कला-पारखी मर्मज्ञ और सचेत विद्वान और विशिष्ट जन इस नेक कार्य में लगे हुए हैं ।

मुख्य प्रयोगशाला
इस्को, कुलहीं-713343

मरणोपंरात एक भिखारी की भूमिका में भिखारी ठाकुर

भोजपुरी के शेक्सपीयर, लोक कलाकार, लोककवि, राय बहादुर पद्यम् श्री तुलसी दास, भोजपुरी रत्न आदि विभूषण से विभूषित भिखारी ठाकुर की जयंती आज भी राजकीय सम्मान पूर्वक नहीं मनाया जाता है । कला के क्षेत्र में ही नहीं बल्कि एक समाज सुधारक के रूप मे भिखारी ठाकुर के नामों की चर्चा राष्ट्रीय स्तर पर तो की जाती है, लेकिन भिखारी ठाकुर के उपेक्षा पर किसी की नजर नहीं जाती है, तभी तो आजादी के 54 वर्ष बाद भी मरणोपरान्त भिखारी ठाकुर एक भिखारी के रूप में खड़ा है, जिसका गीता जागता उदाहरण उनका जर्जर ऐतिहासिक भिखारी आश्रम, पुस्तकालय, खप्परपोश मकान एवं भिखारी पथ है । गंगा, सरयू एवं सोन नदियों से घिरा एक टापू पर अवस्थित उनकी जन्मस्थली सारण जिलान्तर्गत कुतुबपुर आज भीषण कटाव का सामना कर रहा है । भिखारी ठाकुर का पुश्तैनी खप्परपोश मकान एवं ऐतिहासिक भिखारी आश्रम के अलावा 30 हजार की आबादी कब गंगा के गर्भ में विलीन हो जायेगा यह कहना मुश्किल है । लोक कलाकार भिखारी ठाकुर आश्रम तथा चिरान्द स्थित भिखारी पथ की जर्जर हालत की सूचना शायद उनकी 114 वीं जयंती के अवसर पर भी किसी राजनेता, प्रशासन, सरकारी एवं गैर सरकारी संस्था को नहीं है ।

रजनीश कुमार गौरव
मीडिया मैनेजर
भिखारी ठाकुर लोक साहित्य एवं संस्कृति महोत्सव,
छपरा, (सारण)

एक कालजयी कलाकार भिखारी ठाकुर

-अविनाश नागदंश

पतितपावनी गंगा, पुण्यसलिला सरयू सदानीरा ओर सोन से चहुंओर से घिरे बिहार के भोजपुरी भाषी सारण जिले के कुतुबपुर दियारे में 18 दिसम्बर, 1887 को राष्ट्रीय संतकवि-कुल-परम्परा मे एक अत्यंत निर्धन नाई कुल में उत्पन्न कालजयी लोककलाकार भिखारी ठाकुर पूर्वी भारत के बीसवीं सदी के सांस्कृतिक पुनर्जागरण आन्दोलन की वह अग्रणी साहित्यिक विभूति थे, जिन्होने मातृभाषा की मृदुल वीणा की मादक झंकार पर स्वयं लहरों के राजहंस की तरह थिरकते हुए तत्कालीन सामाजिक कुरीतियों पर क्रांतिकारी कबीर की भाँति न केवल करारा प्रहार किया बल्कि उनका निर्णायक रूप से उन्मूलन करने में भी सफल रहे ।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन द्वारा अनगढ़ हीरा के साथ-साथ भोजपुरी के शेक्सपीयर के विभूषण से विभूषित भिखारी ने न तो कभी पाठ पर विधिवत शिक्षा ग्रहण की थी और न ही कभी किसी नाट्य विद्यालय में प्रवेश लिया था किंतु लोकनाट्य प्रस्तुतिकरण की उनकी शैली बिदेसिया आज आधुनिक लोकनाट्य की न केवल सबसे लोकप्रिय शैली मानी जाती है बल्कि राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के पाठ्यक्रम में बकायदा पढ़ाई भी जाती है ।

विस्तृत भोजपुरी भाषी प्रदेश में प्रवाहित अनगिनत सालो भर जल से भरी रहने वाली नदियों के कूलो-कगारों के किनारे बसे गाँवों नगरों को गलियो-डगरों, बाग-बगीचों खेत-खलिहानों और पगडंडियों को अपने सुमधुर गीतों से गुजांयमान कर देने वाले गाँव के परम्परागत नाऊ ठाकुर के वंशगत उत्तराधिकारी भिखारी ठाकुर ने ग्रामीण जीवन का सारा दुःख-दर्द सारे जीवन स्वयं झेला था, समाज की कुरीतियों को बड़ी सूक्ष्मता के साथ देखा था । गाँव भर का हजाम होने के कारण, समाज के प्रत्येक क्षेत्र में जन्म से लेकर मरण तक प्रत्येक अवसर पर उनका प्रवेश अपरिहार्य था । अतः भिखारी से समाज का कुछ भी कटु मधु छुपा न रह सका । वाग्देवी के वरदपुत्र निपढ़ भिखारी ने जो कुछ भी देखा, जो कुछ पाया उसे अपनी मातृभाषा का आश्रय लेकर उसे अपनी देवी प्रतिमा का प्रसाद एवं वर्ण, रूप गंध देकर अत्यन्त सरस-मनोहर बना दिया । उनकी अपार लोकप्रियता, रमणीयता एवं कालजयिता का यही रहस्य है । वास्तव में भिखारी ठाकुर भोजपुरी के पहले रंगकर्मी हैं जिन्होंने नुक्कड़ नाटकों के समिश्रण से भोजपुरी रंगकर्म को नई शैली प्रदान की हैं । जहाँ अभिनेता और दर्शक नाटक आरम्भ होते ही एक-दूसरे से पार्टीशिपेशन करने लग जाते है ।

भिखारी ठाकुर अपने नाटकों को खेला और अपनी मंडली के कलाकारों को समाजी कहा करते थे । उनके नाटकों का आरम्भ बड़े ही विचित्र ढंग से होता था । नाटक शुरू होने के पहले सभी समाजी समवेत स्वर में ऐसा गीत गाते थे, जिससे दर्शको को होने वाले नाटकों का आभास हो जाता था । उनकी यही मौलिक शैली आज बिदेसिया शैली के रूप में जानी जाती है । जबकि 'बिदेसिया' उनका भोजपुरी भाषियों की सनातन पीड़ा, रोजगार की तलाश में प्रवास पर आधारित उनका सबसे प्रसिद्ध नाटक भी है । 'बिरहा बहार' बचपन में गाय चराने वाले भिखारी की प्रथम रचना थी । क्रांतिद्रष्टा कवि कबीर की बेवाक बयानी के अदभूत समन्वय भिखारी ठाकुर ने नाटकों की हलाँकि छोटी-बड़ी दर्जनों पुस्तिकाएं लिखी और वे सभी एक से बढ़कर एक बेहतर हैं किन्तु भिखारी की असली शोभा मंच पर होती थी । वे रंगमंच के सम्राट थे । स्वांग कला के वे निष्णात कलाकार थे । किसी भी पात्र के अभिनय में जान भर देते थे । भिखारी का वास्तविक मूल्यांकन सिर्फ उनकी पुस्तिकाओं के सहारे नहीं किया जा सकता । महेश्वराचार्य का मानना है कि 'जिन्होंने मात्र उनकी पुस्तिकाओं का ही अवलोकन किया हैं, वे नाटककार भिखारी को पूरा-पूरा नहीं जानते, जानते हैं वे जिन्होंने (भिखारी की जीवितावस्था में) उनके नाटकों को मंच पर देखा हैं । पुस्तिकाओं में यदि भिखारी पचास प्रतिशत है, तो सौ प्रतिशत थे अपने मंच पर ।' मंडी हाउस और रवीन्द्र भवन के रंगमंचों पर आजकल के निर्देशकों द्वारा प्रस्तुत 'बिदेशिया' और आम की गाछी में तने शामियानों के तले बिना बुलाये सिर्फ नाम सुनकर, सारा काम-धाम छोड़कर जुट आये बीसीयों हजार दर्शकों के सामने प्रस्तुत भिखारी के नाटको मे वही फर्क है जो बनावटी कागज के फूलों और प्राकृतिक फूलों में । राजधानी दिल्ली के इन प्रेक्षागृहो में बैठा सम्भ्रांत बुद्धिजीवि वर्ग सारे नाटकभर खुशुर-फुसुर करता नजर आता है, वही भिखारी के नाट्यकतला की यह खूबी थी कि उनके मंच पर आते ही चारों तरफ सन्नाटा छा जाता था । गोली से भी नहीं दबने वाले गोबरपट्टी के उदंड दर्शक, हाथों में लम्बा लाठ्ठ लिए कान पात कर भिखारी का भाषण सुनते थे । क्या मजाल की भिखारी के मंच पर होते किसी के मुँह से चूँ भी निकल जाय । फिर भी इन गबरू नौजवानों को सँभलने के अपने-आप ही आ ही जुटता था इलाके का पूरा थाना ।

भारतवासियों की, विशेषकर भोजपुरी भाषियों को वर्तमान अधोदशा से बाहर निकालने के लिए आज फिर से एक नहीं अनेक भिखारी ठाकुर की आवश्यकता जो अपनी नाट्यमंडलियों के सहारे लोगों की उनकी जुबा में गीत-नृत्य-संगीत और अलौकिक अभिनय के माध्यम से गाँव-गाँव घूम-घूम कर जगा सके । जिस प्रकार क्रांतिधर्मा कबीर, लोककवि भिखारी ने उपने तत्कालीन समाज की कुरीतियों पर निर्ममता पूर्वक प्रहार किया था, उसी प्रकार आज के कुरीतियों पर निर्णायक प्रहार करने के लिए प्रेरित कर सके ।

समीक्षकों ने बिहारी के दोहो को नाविक के तीर की संज्ञा दी है तो कबीर के दोहो की कालजयी की उपाधि से नवाजा है । भिखारी के दोहे इन दोनो का अद्‌भूत समन्वय हैं । वह मर्म पर प्रहार तो करते है किंतु प्यार से । महात्मा गाँधी और भगवान बुद्ध की तरह समाजपरिवर्तन के लिए वे हिंसा की बजाय हृदय परिवर्तन के पक्षधर थे । उनकी रम्य रचता जो उन्नीसवीं सदी के दूसरे दशक में लिखी गई थी 'नाई बहार'– वह बीसवीं सदी में किसी दलित द्वारा अपनी जाति का लिखा गया प्रथम व्यथा कथा माना जाता है । भोजपुरिया ग्रामीण समाज में गाँव के हज्जाम कों क्या-क्या पीड़ा झेलनी पड़ती है और समाज इसके प्रतिदान में उसे क्या देता है- इसका जैसा करूण वर्णन इस पुस्तक में है, उसकी मिशाल दुलर्भ है । किंतु संतहृदय भिखारी सभी पंचो से हाथ जोड़, सभ्यता के विकास से लेकर आज तक इस सनातन नाई जाति की व्यथा सुनाकर, उनसे ही कुछ उपाय कर देने की प्रार्थना करते है।

भिखारी ठाकुर साहित्य को संरक्षित एवं संबर्धित करना होगा । दुख और क्षोभ का विषय है कि भिखारी ठाकुर की स्मृति से जुड़े तमाम अवशेष और उनका पुश्तैनी मकान आज गंगा के गर्भ मे विलीन होने को है पर न तो सरकार और नही कोई सांस्कृतिक अथवा समाजसेवी संस्था का ध्यान इस ओर जा रहा है । कुतुबपुर अवस्थित लोककलाकार भिखारी ठाकुर आश्रम मरम्मत के अभाव में ढ़ह रहा है एवं कमरे में एक ग्रामीण चिकित्सक ने कब्जा जमा लिया है तो बड़े हॉल मे इलाके के जुआरियों और गंजेड़ियों का हजूम सारे दिन कब्जा जमाये रहता है । भिखारी ठाकुर के वंशज और उनकी क्रमशः अन्य पेशों की ओर उन्मुख होते गए । उनमे से अधिकांश फटेहाल अवस्था में किसी तरह दिन गुजार रहे है ।

गंगा के धारा परिवर्त्तन के कारण भिखारी ठाकुर की जन्मभूमि कुतुबपुर का गंग-शिकस्त होना तय है, ऐसा दियारावासियों ने मान लिया है और जो साधन सम्पन्न है वे गंगापार आकर जमीन खरीदकर, मकान बनाकर बस रहे है । किन्तु जो निर्धन है वे अपनी जान खतरे में डाल आज भी प्रतिदिन पास आती जा रही गंगा को भयभीत नजरों से निहारते और रात के सन्नाटे में गंगा की तेज धाराओं से ढ़हते अरारों की गूंज को सुनते दिन गुजार रहे हैं , जिनमें भिखारी का परिवार भी एक है । जो कमजोर हृदय है वह किसी बॉध पर किसी पेंड़ के नीचे इस कड़ाके की सर्दी में खुले आसमान में दिन गुजार रहे हैं। अपनी आर्थिक विपन्नता की दुहाई देते हुए भिखारी के परिजनो ने ही नहीं अपितु जिले के अनेक साहित्यकारों, संस्कृतिकर्मियों एवं स्वयंसेवी संगठनों ने सरकार से उनको छपरा नगर में भूमि का पट्‌ठा एवं इंदिरा आवासगृह बनवा देने की मांग की हैं, पर नतीजा आजतक सिफर ही रहा है । लोक कलाकार भिखारी ठाकुर आश्रम के मंत्री रामदास राही के प्रयत्नों से प्रथम पुष्प के महेश्वराचार्य की समीक्षा-पुस्तक एवं द्वितीय पुष्प के रूप में भिखारी ठाकुर रचनावली के प्रथम खंड तथा द्वितीय खंड तो प्रकाशित हो

चुका है पर शेष रचनाएँ आजतक अर्थाभाव के कारण संकलित होकर एक दशक से भी अधिक से प्रकाशन की बाट जोह रही है ।

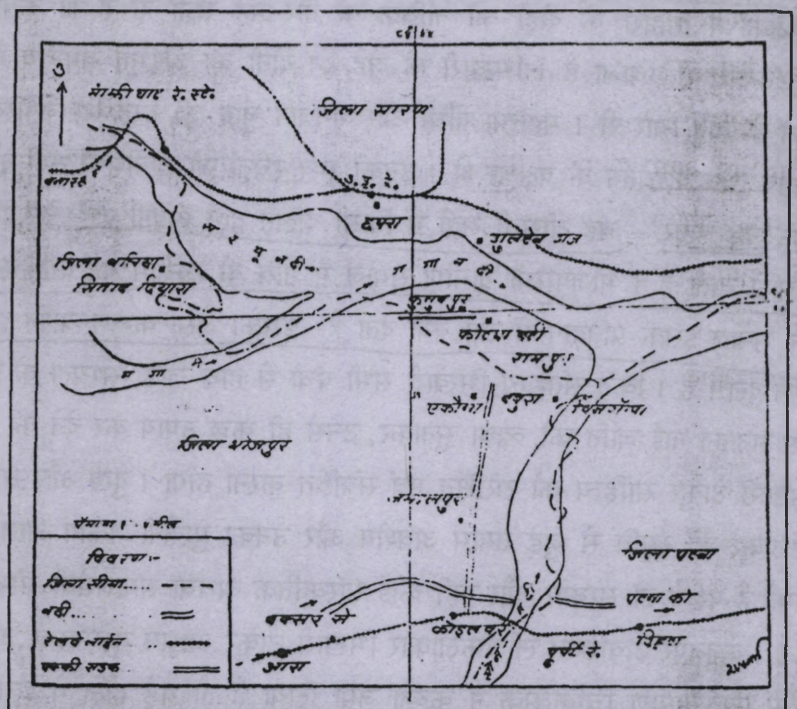

भिखारी ठाकुर का गाँव

अखिल भारतीय दलित साहित्य सम्मेलन दिल्ली में दिवसीय सम्मेलन मे जाने का अवसर प्राप्त हुआ था । किन्तु जब पूरे दलित विमर्श एवं दलित साहित्य में भिखारी मुझे कहीं ढूढ़ने पर नजर नही आये तो इसका कारण आये एक से सम्मेलन में बताया । वह बड़े प्रकाशक ने ज्यादा मुझे सबसे होता है । समीचीन प्रतीत उस प्रकाशक ने कहा था कि भिखारी को रिजनल से नेशनल अथवा ग्लोबल बनाना चाहते हैं तो उनको नेशनल और ग्लोबल लैग्वेल में अनुदित करे। कविगुरू रवींद्रनाथ ठाकुर को भी नोवल पुरस्कार गीतांजलि के अंग्रेजी में छपने पर ही मिला था । इसमें कोई शक नहीं कि भिखारी अनुवाद के माध्यम से देश अथवा विदेश के जिस कोने में पहुँचेगें अपने ललित सौदर्य और मार्धुर्य, अपनी स्पष्टवादिता, प्रकृति, मातृभूमि, मातृभाषा प्रेम और काव्य एवं नाट्य सौन्दय के लिए उसी प्रकार सराहे जायेगे जिस प्रकार विद्यापति, अथवा कबीर सराहे जाते हैं । संचार क्रांति के इस युग में उनकी सभी कृतियों विश्व जगत को भिज्ञ कराना आज तो और भी सहज हो गया है । जरूरत है तो इस सिलसिले में कार्य करने के दृढ़ संकल्प उद्यमियों की, उद्यमी युवको की भविष्य उनकी बाँहे फैलाये प्रतीक्षा कर रहा है ।

फोटो फीचर

हाल भिखारी ठाकुर के गाँव का

भिखारी ठाकुर पुश्तैनी मकान में लगी तस्वरी

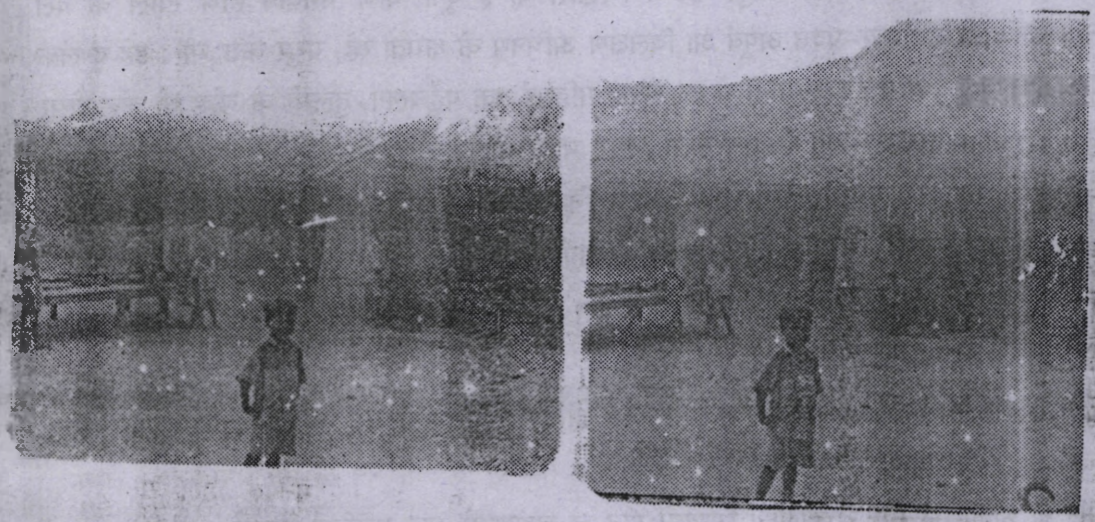

जीर्ण शीर्ण हालत में उनका घर

भोजपुरी खण्ड

भिखारी ठाकुर के साहित्य में गीत-योजना

-(डॉ॰) उषा वर्मा

लोककलाकार भिखारी ठाकुर के साहित्य में गीत-योजना पर विचार करे के पहिले उनका साहित्य पर दू शब्द कह देहल जरूरी बा । उनका साहित्य के दूगो खासियत बा- (1) दृश्य आ (2) गेय । आपन सब रचना, जवना के ऊ 'तमासा' कहस, रंगमंच पर अभिनीत करके देखवलन आ गा से सुनवलन । उनकर सब रचना ताल आ लय में सुने के आ देखे के चीज रहे । कहीं-कहीं गद्य के प्रयोग भी होखे, लेकिन बहुत कम । देख के आस्वादन करेवाला चीज नाटक ह । एह से भिखारी के सब रचना नाटक के सीमा में आ गइल ।

नाटक अपना आप में बहुत प्रभावशाली चीज ह । एकरा के सब साहित्यिक विधा के जननी कहल जा सकत बा । जहाँ सब विधा चुक जाला, नाटक बाजी मार ले जाला । इहे हाल गेय के बा। कहला आ गवला में बहुत फर्क पड़ेला । गावल चीज ढेर असरदार होला, संवेदना के पकड़ेला, मन के बाँधेला आ देर तक भीतर गूँजत रहेला । नाटक के सही रसास्वादन खातिर अच्छा अभिनय जरूरी बा, गीत के सही रसास्वादन खातिर मधुर कंठ । भिखारी के ई दूनो चीज भगवान हाथ खोल के देले रहलन । उनका पास ईश्वर-प्रदत्त अपूर्व आ विलक्षण अभिनय के क्षमता रहे, मधुर कंठ भी । इहे दू लेके भिखारी जनमानस तक जेतना आसानी से आ जेतना गहिराई तक पहुँचलन, तुलसी के छोड़ के केहू दोसर ना पहुँच सकल । तुलसी भक्त विद्वान लोग अगर माफ कर देवत दबे-जबान ई कहल जा सकत बा कि कहीं-कहीं भिखारी तुलसी से भी आगे निकल गइल बाड़न । ई सही बा कि इनका पास तुलसी के पांडित्य नइखे । हो भी नइखे सकत । कहाँ गँवई गँवार, कहाँ पढ़ल पंडित । लेकिन, जहाँ तक सहजे अर्थ-बोध कराके सराबोर कर देवे के सवाल बा, भिखारी के लोहा माने इनकार करे के कवनो गुंजाइश नइखे ।

गेय आ गीत में फर्क होला । सब गीत गेय होला, लेकिन सब गेय गीत ना होला । गीत बहुत गहीर चीज ह । असरदार भी गीत पत्थर के पानी बना सकता, इस्पाती मन के हिला सकता । जे केहू से कायल ना होला, से गीत से होला । भिखारी गीत के लक्षण से खूब परिचित रहलन । एह से उनका साहित्य मे गीत के खूब प्रयोग भइल । जब भिखारी आपन 'बिदेसिया' लेके लोकरंगमंच पर उतरलन, तब उनका सामने कुछ आंचलिक लोकनाट्य-रामलीला, यात्रा, नेटुआ के नाच, जोगीड़ा, तमासा, नौटंकी

के अलावा पारसी थियेटर कम्पनी भी रहे । ई सब अपना नाटक-तमासा में गीत राखत रहे । लेकिन ओह गीतन के मूल नाटक के कथा से कवनो मतलब ना रहत रहे । कहल जा सकत बा कि ऊ गीत एक तरह से पेवन (पेवंद) रहे-नाटक से अलग, आपन अलग रंग आ मिजाज लेले । भिखारी पहिला आदमी रहलन, जे गीत के पेवन-परिपाटी से अलग कइलन । दूसर खास बात ई भइल कि तब लोकनाट्य में गीत के इस्तेमाल मात्र मंनोरंजन तक सीमीत रहे । भिखारी गीत के -मात्र मंनोरंजन' के दायरा से मुक्त कइलन । लेकिन उनका मुक्ति के तरीका लाजवाब रहे । ऊ गीत के एतना मंनोरंजक आ दिलकश बनवलन कि लाज ओमें लपटाइल उनका जीवनोपयोगी आ समाजोपयेगी उपदेसो के खुशी-खुशी हजम कर जात रहे । तब भिखारी के सूक्ति बात-बात पर 'कोट' कइल जाव । गाँव के लोग खातिर त उहे व्यास, उहे कालिदास, तुलसी, सुर मीरा कबीर जायसी आ रसखान रहलन । विलक्षण प्रतिभा लीक पर ना चले । ऊ आपन रास्ता अपने बनावेला । इहे प्रतिभा के खास पहिचान ह । भिखारी के प्रतिभा के खराद पर चढ़ के प्रतिभा आपन नया रूप-रंग गीत निखर गइल । मानस पर छा गइल । लेकिन उभरल आ लोक गीत के कला पक्ष आ भिखारी के भाव पक्ष में बड़ा मेल बा । भाव हमेशा कला के माँगे के ताक में बा आ कला हमेशा भाव के उजागर करे के ताक में । एह खासियत के ख्याल में रख के उनका गीतन के विषय में कहल जा सकत बा कि-

> "तुलसी भक्त विद्वान लोग अगर माफ कर देवत दबे-जबान ई कहल जा सकत बा कि कहीं-कहीं भिखारी तुलसी से भी आगे निकल गइल बाड़न ।"

(1) भिखारी के गीत हमेशा कथा आ प्रसंग से जुड़ के चलेला । कथा के आगे बढ़ावे में सहयोग देला । परिस्थिति के सजीव बनावेला । कहीं बेकार ना लागे ।

(2) भिखारी के गीत उनकर बंधुआ मजदूर ह । ओकरा से जे चाहेलन से करवा लेलन । चाहे समाज के कवनों बुराई पर चोट करे के होखे, चाहे व्यक्ति विशेष के चरित्र भा रूप के उकेरे के, चाहें परिस्थिति-विशेष के चित्र खींचे के होखे, चाहे दर्शन के कवनों रस में डुबावे के, उनकर गीत हर काम में हमेशा अपना भरपूर ताकत से तैयार रहेला ।

(3) भिखारी के गीत प्रसाद गुण सम्पन्न बा । एह हद तक कि ई कहल कठिन बा कि पहिले उनका गीत से अर्थ-बोध होला कि रसबोध । तुलसीदास के एही अनिर्णय के स्थिति में कहे के पड़ल -

बानासन तें रावरें, बान विषम रघुनाथ ।
दससिर मिर धर तें छुरे, दोऊ एकहि साथ ।।

भिखारी के गीत में प्रसाद गुण के स्थिति कुछ अइसने बा ।

(4) साधारणीकरण के क्षमता में भिखारी का गीत के कवनों सानी नइखे । अब उनकर गीत जन-जन के गीत ह । आता-पता नइखे चलत, कइसे उनकर गीत लोग के जबान पर चढ़ के रोजमर्रा के जीवन के अंग बन जाता । भिखारी खुद चकित बाड़न-

नाँव भइल बा बहुत दूर लें, नाव के लबारी में ।
केहू जपत बा गाय चरावत, केहू जपत बनिहारी में ।
X X X X
केहु जपत बा हम ना देखलीं, ऊपर भइल बुढ़ारी में
भोजन करत में बालक सुमिरत, भात दाल के थारी में,
केहु जपत बा चाउर तउलत, केहु जपत मनिहारी में,
केहू जपत बा सेम साग में, भंटा तुरत कोड़ारी में,
X X X X
केहु जपत बा आम गाछ प, केहु जपत बँसवारी में,
केहू जपत बा परिहथ धइले, जोतत खेत बधारी में,
X X X X
केहु जपत बा हयदल, पयदल, मंदिर केहु अटारी में,
केहु जपत बा जवरा कइले, बइठल रेल सवारी में,

(5) करुणा भिखारी के आपन खास क्षेत्र ह । शेली कहलें रहलन कि "Our sweetest songs those are that tellus of our saddest thought" वाल्मिकी के कवि होखे के कारण रहे मन में करुणा के उद्रेक-

"म निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समा
यत्क्रौञ्च मिथुनोदक अवधीः काम मोहितम् ।।"

कवि पंत भी करुणा के हिमायती बाड़न, 'वियोगी होगा पहला कवि ।' लेकिन भिखारी के करुणा के रंग कुछ ज्यादा ही चोख बा । उनकर करुणा प्रसाद गुण के चादर में लपटा के एतना पारदर्शी आ सहज-सुलभ हो गइल बा कि कबो-कबो भाषा के सीमा पर शक होता आ बुझाता कि अनुभूति आ परिस्थिति के कवनो भंगिमा अइसन नइखे जे भाषा के पकड़ में ना आ सके । जवना सहजता से भिखारी करुणा के उद्रेक कर देलन, दोसर ना कर सके उनका 'बिदेसिया' 'भाई बिरोध', 'बेटी वियोग', 'पुत्र वध' आदि नाटकन में करुण रस से भरपूर गीत के भरमार बा ।

(6) हास्य में भी भिखारी पीछे नइखन । 'बेटी वियोग' में करूणा के पहिले के हास्य देखे लायक बा । ओह हास्य से एक साथ तीन लक्ष्य के सिद्धि होता –

(1) दर्शक हँसलेत बाड़न, (2) दुलहा के रूपरेखा सजीव हो जाता, (3) दर्शक भावि करूण प्रसंग वास्ते तैयार हो जात बाड़न ।

(7) आरेस्टोटल कहले रहलन कि नाटक में एगो बहुत बड़हन उद्देश्य रेचन ह । आदमी के मन में जो घुटन रहेला, ओकरा के कवनो तरह कह-सुन-देख लेला से मन शांत हो जाला । इहे रेचन ह । भिखारी के गीत में रेचन के खूबे गुंजाइश बा — कहीं-कहीं ऐतना कि 'शालीन' कहायेवाला लोग दिक्कत में पड़ जाला ।

(8) भिखारी में राधेस्याम संबंधी गीत से सूरदास के साथे-साथे रीतिकाल के इयाद भी ताजा हो जाला । उनकर सीता-राम संबंधी गीत से तुलसी का सामने खड़ा हो जालन ।

(9) भिखारी के प्रायः सब गीत सोद्देश्य बा । गीत के जरिये तत्कालीन समाज के बुराई पर चोट करे के कला में भिखारी माहीर बाड़न । ए अर्थ में ऊ काम त कबीर लेखा कइलन, लेकिन भाषा आ शैली आपन खास रखलन । लोकगीत के मिठास में लपेट के एक-से-एक प्रहार कइलन, लेकिन केहु घवाइल ना भइल ।

(10) भिखारी के सब गीत लोकगीत के तर्ज पर बा । लोकगीत से लपटाइल आदमी के एगो संस्कार लिपटल रहेला । एह से ओकर पहुँच मन में बहुत गहिराइ तक हो जाला । आजकल हिन्दी गीत लोकगीत के तरफ ललचा के देखत बा कवनो अचरज के बात नइखे । परिनिष्ठित कला जब-जब कमजोरी महसूस करेला, लोककला से उधार लेला । भिखारी के लोकगीत से उधार लेके हिन्दी गीत अपना के तरोताजा बना सकत बा ।

आचार्य एवं अध्यक्ष
स्नातकोत्तर, हिन्दी विभाग
जे० पी० विश्वविद्यालय, छपरा